सेठ सुदर्शण गुण कुं जो, जिण किण विध पाल्यो शील ।
घोर परीषह किम सह्या, ज्यूं फोजां में पील गलील ॥७॥
घोर परीषह तिण सह्या, पाल्यो निर्मल शील ।
तास चरित्र वखाणतां, पामे अविचल लील ॥८॥

ढाल १ ली ।

(देशी—धीज करे सीता सती रे लाल)

तिण काले ने तिण समे रे लाल, चम्पा नगर वखाण रे । सौभागी । भरत खेतर अंगदेश में रे लाल, इन्द्रपुरी सम जाण रे ॥ सौभागी । शील तणा गुण सांमलो रे लाल ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥ राज करे रलियामणो रे लाल, धात्रीवाहन नामे राय रे ॥ सौ० ॥ जात कुल तिणरी निर्मली रे लाल, ते खंडे नवि नीत न्याय रे । सौ० ॥ शी० ॥ २ ॥ धात्रीवाहन राजा तणी रे लाल, पटराणी अभया नार रे । सौ० । ते रूपे रम्भा सारषी रे लाल, अपछर रे उणिहार रे । सौ० ॥ शी० ॥ ३ ॥ जिहाँ जिन तणी महिमा घणी रे लाल, शुद्ध साधाँ रो घणो पर-

वेश रे। सौ०। श्रावक श्राविका वसै घणा रे लाल, दया धर्म तणी वहु रेंश रे। सौ० ॥ शी० ॥ ४ ॥ ऋषभदास सेठ तिहाँ वसै रे लाल, धन घणो परभूत रे। सौ०। ते पालै छै व्रत श्रावक तणा रे लाल, निज कुटुम्ब में मेढी-भूत रे। सौ० ॥ शी० ॥ ५ ॥ जिनमति भारज्या तेहनी रे लाल, पालै श्रावक रा व्रत बार रे। सौ०। चतुर चतु-राई कर शोभती रे लाल, रूप गुणे श्रीकार रे। सौ० ॥ शी० ॥ ६ ॥ सुख सेज्या में सुताँ एकदा रे लाल, सेठाणी मध्य रात रे। सौ०। मेरु सुदर्शण दीठो सुपना मझै रे लाल, तिणरो फल पूछ्यो परभात रे। सौ० ॥ शी० ॥ ७ ॥ सुपन-पाठक इम भाषियो रे लाल, थांरै होसी पूत सपूत रे। सौ०। थांरै कुल मे दीपक सारपो रे लाल, होसी कुटुम्ब में मेडी भूत रे। सौ० ॥ शी० ॥ ८ ॥ सुपना तणो फल सांभली रे लाल, हुवो हर्ष हुलास रे। सौ०। दान सनमान दे पाछो मोकल्यो रे लाल, यांरै मन में मोटी आश रे। सौ० ॥ शी० ॥ ९ ॥ सवा नव मास पूरा हुवाँ रे लाल, जन्म्यो पुत्र सुकुमाल रे। सौ०। त्यांरा लक्षण गुण कर शोभतो रे लाल, मंजणादिक सर्व

विशाल रे। सौ० ॥ शी० ॥ १० ॥ जन्म मोछव किया तेहना रे लाल, करै घणा हगाम रे। सौ०। मेरु सुदर्शण नो सुपनो लह्यो रे लाल, तिण सूं दियो सुदर्शन नाम रे। सौ० ॥ शी० ॥ ११ ॥ आठ वरस वीत्याँ पछै भण्यो रे लाल, हुवो बहुतर कला रो जाण रे। सौ०। सुखे समाधे मोटो हुवो रे लाल, डाहो चतुर सुजाण रे। सौ० ॥ शी० ॥ १२ ॥ कपिल प्रोहित साथे भण्यो रे लाल, तिण स्यूं वन्धाणी प्रीत रे। सौ०। मन्त्री भाई थाप्यो तेहने रे लाल, माहोंमाहें दीठाँ नैण ठरीत रे। सौ० ॥ ॥ शी० ॥ १३ ॥ कपिल पुरोहित तेहनी रे लाल, कपिला नामे नार रे। सौ०। तिणरा लक्षण घणा छै पाड़वा रे लाल, शुद्ध नहीं छै प्रणाम रे। सौ० ॥ शी० ॥ १४ ॥ बेटी सागरदत्त सेठ नी रे लाल, नाम मनोरमा जाण रे। सौ०। सुदर्शन जोग जाणी करी रे लाल, परणाई मोटै मंडाण रे। सौ० ॥ शी० ॥ १५ ॥ मनोरमा मोटी सती रे लाल, पालै श्रावक ना व्रत बार रे। सौ०। शीलादिक गुण तिण में घणा रे लाल, पात्रदान देवै बारम्बार रे। स० ॥ शी० ॥ १६ ॥ पुत्र व्याव कियो हर्ष स्यूं रे

लाल, धन खरच्यो विविध प्रकार रे । सौ० । सज्जन सहु सन्तोपिया रे लाल, सुख विलसै संसार रे । सौ० ॥ शी० ॥ १७ ॥ सेठ सेठाणी एकदा रे लाल, जाण्यो अथिर संसार रे । सौ० । निज पुत्र ने घर सूंप ने रे लाल, लीधो संजम भार रे । सौ० ॥ शी० ॥ १८ ॥ सुदर्शन ने पदवी दीधी सेठ नी रे लाल, धात्रीवाहन राजान रे । सौ० । ते प्रसिद्ध चावो छै लोक में रे लाल, परभूत घणो ऋद्धवान रे । सौ० ॥ शी० ॥ १९ ॥ संसार ना सुख भोगवताँ थकाँ रे लाल, जन्म्यो पुत्र सुकुमाल रे । सौ० । नांव सुकंत दियो पिता रे लाल, तिण में सगला गुण छै विशाल रे । सौ० ॥ शी० ॥ २० ॥ सेठ सुदर्शन श्रावक तणा रे लाल, बारै व्रत पालै छै रूड़ी रीत रे । सौ० । ते देवादिक नो डिगायो डिगै नहीं रे लाल, तिण री लोकाँ में घणी परतीत रे । सौ० ॥ शी० ॥ २१ ॥ च्यार पोसा करै एक मास में रे लाल, मसाण भोम में जाय रे । सौ० । ते राते पण रहै छै मसाण में रे लाल, निरभय थको मन मांय रे । सौ० ॥ शी० ॥ २२ ॥ यांरै भागवली सरीपी मिली रे लाल, जेहवी स्त्री तेहवो भरतार रे । सौ० । दोनूं पालै

छै व्रत श्रावक तणा रे लाल, माहों माहें प्रीत अपार रे।
सौ० ॥ शी० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

सहु संयोग आवी मिल्या, जेहने जेहवी चाय।
करणी स्यूं सुख पामियो, ते सुणज्यो चित्तलाय ॥१॥

॥ ढाल २ जी ॥

(देशी—सोरठे की चाल में)

विद्या घर अरु नार रे, सम्पत देह शरीर सुख।
मांग्या मिलै न च्यार रे, पूर्व सुकृत कियाँ विना ॥१॥
एक नर पंडित प्रवीण रे, एक ने आखर ना चढ़ै।
एक नर मूरख दीन रे, भाग विना भटकत फिरै ॥२॥
एकण रे भरिया भण्डार रे, ऋद्ध सम्पत घर में घणी।
एकण रे नहीं लिगार रे, दीधा सोई पाइये ॥३॥
एकण रे आभूपण अनेक रे, गहणा विविध प्रकार ना।
एकण रे नहीं एक रे, वस्त्र विना नागो फिरै ॥४॥

एक नर जीमैं कूर रे, सीरो पूरी लापसी।
एकण रे नहीं चूर रे, भीख मांगत भटकत फिरैं ॥५॥
एक नर पोढ़ैं खाट रे, सेज बिछाई ऊपरैं।
एक नर ढूंढ़ैं हाट रे, आदर मान किहाँ नहीं ॥६॥
एक नर हय असवार रे, चढ़ैं हस्ती ने पालखी।
एकण रे शिर भार रे, गांव गांव भटकत फिरैं ॥७॥
एकण रे रहैं हजूर रे, हाथ जोड़ हाजर रहैं।
एक नर ने कहै दूर रे, निज़र मेलैं नहीं तेह स्यूं ॥८॥
एक नर निरमल देह रे, एक ने रोग पीड़ा घणी।
किसो कीजै अहमेव रे, किया सोई पाइये ॥९॥
एक नर सुन्दर रूप रे, गमतो लागैं सकल ने।
एकज कालो कुरूप रे, गमतो न लागैं केहने ॥१०॥
एक बालक विधवा नार रे, रात दिवस झूरैं घणी।
एक सज सोलैं शिणगार रे, रत रत ना फल भोगवैं ॥११॥
एक नर छत्र धराय रे, आण मनावैं देश में।
एक नर अलाणैं पाय रे, फिरैं घर घर टुकड़ा मांगतो ॥१२॥
एक बैस सिंहासण पाट रे, हुकम चलावैं लोक में।
एक फिरेज हाटो हाट रे, एक कोडी रे कारणे ॥१३॥

एक नर जीमै क्रूर रे, सीरो पूरी लापसी ।
एकण रे नहीं चूर रे, भीख मांगत भटकत फिरै ॥५॥
एक नर पोढ़ै खाट रे, सेज बिछाई ऊपरै ।
एक नर ढूंढ़ै हाट रे, आदर मान किहाँ नहीं ॥६॥
एक नर हय असवार रे, चढ़ै हस्ती ने पालखी ।
एकण रे शिर भार रे, गांव गांव भटकत फिरै ॥७॥
एकण रे रहै हजूर रे, हाथ जोड़ हाजर रहै ।
एक नर ने कहै दूर रे, निजर मेलै नहीं तेह स्यू ॥८॥
एक नर निरमल देह रे, एक ने रोग पीड़ा घणी ।
किसो कीजै अहमेव रे, किया सोई पाइये ॥६॥
एक नर सुन्दर रूप रे, गमतो लागै सकल ने ।
एकज कालो कुरूप रे, गमतो न लागै केहने ॥१०॥
एक बालक विधवा नार रे, रात दिवस झूरै घणी ।
एक सझ सोलै शिणगार रे, रुत रुत ना फल भोगवै ॥११॥
एक नर छत्र धराय रे, आण मनावै देश में ।
एक नर अलाणे पाय रे, फिरै घर घर टुकड़ा मांगतो ॥१२॥
एक बैस सिंहासण पाट रे, हुकम चलावै लोक में ।
एक फिरेज हाटो हाट रे, एक कोडी रे कारणे ॥१३॥

एक सारै निज काज रे, संजम मारग आदरै ।
एकज विलसै राज रे, काज विगाड़ै आपणो ॥१४
एक रमै नर नार रे, मद मांस तणा भक्षण करै ।
त्यांरै दया न दिसै लिगार रे, ते सुख पामै किण विधे ॥१५
एक नर पालै शील रे, साध तणी सेवा करै ।
पामै अविचल लील रे, मोख तणा सुख शाश्वता ॥१६
निरफल रूंखज होय रे, निरफल होय जावै असतरी ।
सुणज्यो भवियण लोय रे, करणी कदे निरफल नहीं ॥१७
सती मनोरमा नार रे, सेठ सुदरशण तेहनी ।
पालै श्रावक ना व्रत बार रे, पुन्य जोगे जोड़ी मिली ॥१८॥
पूरव भव पिण सेठ रे, सेवा कीधी साधाँ तणी ।
एकज रात नी नेठ रे, आगै इधकार चालसी ॥१९॥

॥ दोहा ॥

एक सुदरशन सेठ जी, वीजी मनोरमा नार ।
धर्म्म कर्म्म हिल मिल करै, ते विरला संसार ॥ १ ॥
एक दिन सेठ सुदर्शन, घर काज गयो किण काम ।
कपिल मित्र तणै घरे, आय लियो विश्राम ॥ २ ॥

कपिल मन्त्री तेहनी, कपिला नामे नार।
रूपे रम्भा सारसी, अपछर ने उणिहार ॥ ३ ॥
कपिला नार छै निरलजी, शीलादिक गुण करि ने रहित।
रूपवंत देखै पुरुष पार को, करती न शंकै प्रीत ॥ ४ ॥
सेठ सुदरशण देखियो, इचरज हुई अपार।
धन्य जमारो तिण नार नो, तिण रे ए भरतार ॥ ५ ॥
रूप देख विरहणी थई, वंछै सुदरशण स्यूं काम भोग।
काम राग करती थकी, जाणै मेलूं ए संजोग ॥ ६ ॥

ढाल ३ जी।

(देशी—जाण पणो जग दोहिलो रे लाल)

कपिला काम आतुर थई रे लाल, ते कह्यो कठै लग जाय। कपटण कामणी रे। सेठ स्यूं जोग मिलै नवी रे लाल, तिण रा दुःख माहें दिन जाय। क० ॥ क० ॥१॥ ते मूल न घालै विनार। क०। तिण री आशा वंछा छूटै नवी रे लाल, एहवो छै काम विकार। क० ॥ क० ॥ २ ॥ पूरी निद्रा न आवै तेहने रे लाल, धान पिन पूरो नवि खाय। क०। घर काम पिन हाथ चढ़ै नवी रे लाल,

एक सारैं निज काज रे, संजम मारग आदरे ।
एकज विलसै राज रे, काज विगाड़ै आपणो ॥१४॥
एक रमै नर नार रे, मद मांस तणा भक्षण करै ।
त्यांरै दया न दिसै लिगार रे, ते सुख पामै किण विधे ॥१५॥
एक नर पालै शील रे, साध तणी सेवा करै ।
पामै अविचल लील रे, मोख तणा सुख शाश्वता ॥१६॥
निरफल रूंखज होय रे, निरफल होय जावै असतरी ।
सुणज्यो भवियण लोय रे, करणी कदे निरफल नहीं ॥१७॥
सती मनोरमा नार रे, सेठ सुदरशण तेहनी ।
पालै श्रावक ना व्रत वार रे, पुन्य जोगे जोड़ी मिली ॥१८॥
पूरव भव पिण सेठ रे, सेवा कीधी साधाँ तणी ।
एकज रात नी नेठ रे, आगैं इधकार चालसी ॥१९॥

॥ दोहा ॥

एक सुदरशन सेठ जी, वीजी मनोरमा नार ।
धर्म्म कर्म्म हिल मिल करै, ते विरला संसार ॥ १ ॥
एक दिन सेठ सुदर्शन, घर काज गयो किण काम ।
कपिल मित्र तणै घरे, आय लियो विश्राम ॥ २ ॥

। क० । आगल पाछल सोचै नवी रे लाल, एहवी छै नार अजोग । क० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

जेहने जेहवी इच्छा उपजै, तेहिज करै उपाय ।
विगड़ो भावै सुधरो, भावै ज्यूं होय जाय ॥ १ ॥
कपिला विरह व्यापी थकी, करै अनेक उपाय ।
दाव कोई लागै नहीं, सेठ मिलण री चाहय ॥ २ ॥
कपिला केरो शिरधणी, गयो किणही एक गांव ।
सेठ लेवा ने दासी मोकली, कूड़ी बात बनाय ॥ ३ ॥
जे कर स्याही घोलिये, सात समुद्र जल आण ।
कागद एतो आणिये, तीन लोक प्रमाण ॥ ४ ॥
सर्व वनस्पति आण ने, तेहनी कलम कराय ।
तिरिया केरा चरित्र ने, लिखे जो जुक्त लगाय ॥ ५ ॥
सर्व स्याही कागद खपै, कलम नवे खप जाय ।
त्रिया चरित्र तो छै घणो, न लिख्यो किणी लिखाय ॥६॥
त्रिया में अवगुण घणा, भाख्या श्री जिनराय ।
तंदुवियालिया ग्रन्थ मे, दीधा तिहां बताय ॥ ७ ॥

आजो रे । मोनै उंतावल स्यूं बोलायो किण कारणै रे ॥७॥ जब बोलै दासी रे, तुम मित्र उदासी रे । त्यांरै व्याध कष्ट शरीर में उपनो रे ॥ ८ ॥ दासी नी सुण वाणो रे, हियो हेज भराणो रे । काम कारज सर्व छोड़ी उठ चल्यो रे ॥ ६ ॥ मन्त्री ने घरे जायो रे, उभो चौक में आयो रे तिण कपट न जाण्यो चिरताली नार नो रे ॥ १० ॥ सेठ कहे छै आमो रे, मन्त्री छै किण ठामो रे । जब दासी कहै मन्त्री सूतो महल में रे ॥ ११ ॥ कहे आप उभा रहिज्यो रे, उंतावल मत कीज्यो रे । थांरै मन्त्री ने थां आयांरी, देऊं वधावणी रे ॥ १२ ॥ सेठ उभो तिवारै रे, दासी चढ़ी चोवारै रे । कपिला स्यूं जाय करी जतावणी रे ॥ १३ ॥ सुण कपिला हरषी रे, वणी अपछरा सरषी रे । आभूषण पहरी ने अङ्ग शिणगारियो रे ॥ १४ ॥ सेझ्या माहें सूती रे, विपे मांहे विगुती रे अंग सब ढांकी ने ओढ्यो पछेवड़ो रे ॥ १५ ॥ उतावल मत कीज्यो रे, सेठ ने दिल में भेद मत दीज्यो रे । कींवाड़ आडा जड़ दीज्यो वारणा रे ॥ १६ ॥ दासी सुण आमो रे, करने सब कामो रे । पछै कपिला चिरताली ने जाय दासी कह्यो

लागी घणा दिनां तणी रे ॥ २८ ॥ मो स्यूं लाज मूको रे, ए अवसर मत चूको रे। मिनख जमारा रो लाहो लीजिये रे ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

वचन सुणी कपिला तणो, देख्यो रूप अनूप।
आ अंग स्यूं अंग भीड़ी रही, सेठ विलखो थयो स्वरूप ॥१॥
गात्र परसेवो चल्यो, कंपण लागी देह।
मैं चरित्र न जाण्यो नार नो, तिण स्यूं आय फंस्यो छूं एह ॥२॥
पिण शील न खंडूं मांहरो, आ करै अनेक उपाय।
जो वश छै मांहरी आत्मा, तो न सकै कोई चलाय ॥३॥
समदृष्टि विवश हुवै, पालै व्रत अभङ्ग।
ज्यूं ज्यूं परीसा उपजै, तिम तिम चढ़तै रंग ॥ ४ ॥
कष्ट पड्यां कायम रहै, ते साचेला शूर।
केइ कायर विकल जीव ते, भाग हुवै चकचूर ॥ ५ ॥
बैरी ते लारै पड्यां, भाग्यां भलो न होय।
पग रोपी सामो मंडै, तो गंज न सकै कोय ॥ ६ ॥
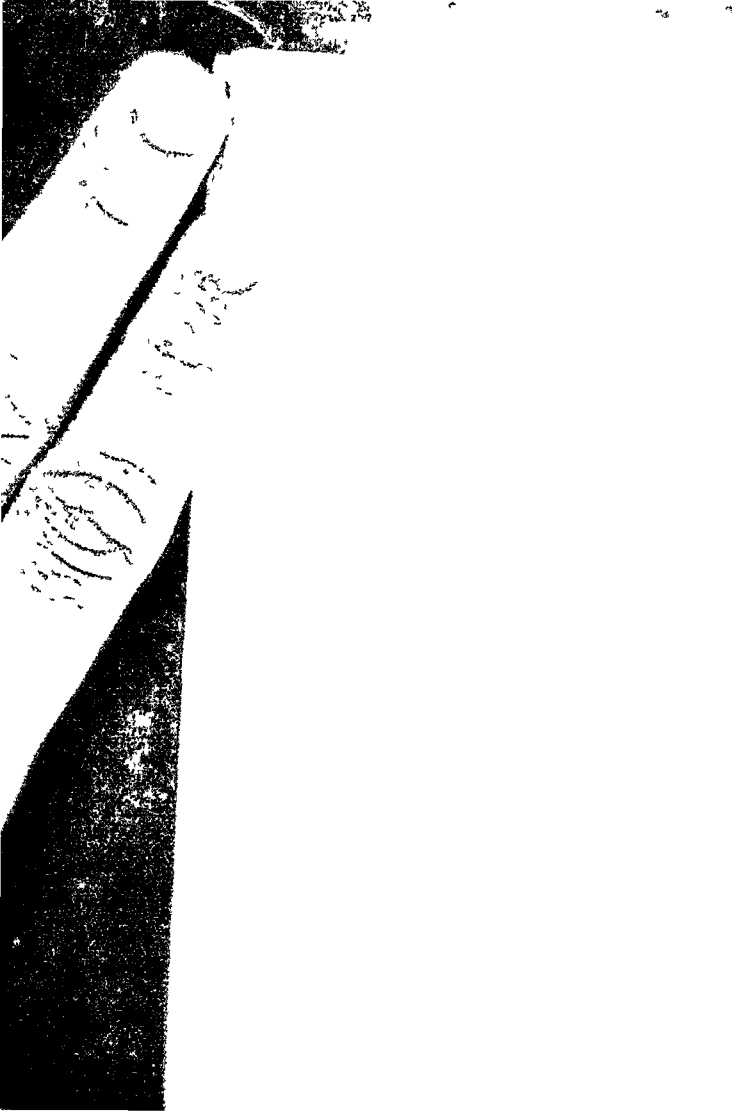
॥ ६ ॥ मो स्यूं भोग भोगव्यां विना, जावा नहीं देऊं गेह । मो ने आशा अलुधी मेल ने, किण विध देस्यो छेह ॥ वै ॥ ७ ॥ जब सेठ जाण्यो आ पापणी, नहीं हुवै अंग स्यूं दूर । इणने अलगी करवा भणी, डरतो बोलै छै कूड़ ॥ वै० ॥ ८ ॥ सेठ कहै कपिला भणी, तूं तो मूढ़ गिंवार । पुरुष पणो नहीं मो भणी, ते नहिं तो ने खबर लिगार ॥ वै० ॥ ९ ॥ जो पुरुष पणो हुवै मांहरे, तो तुरन्त करूं थास्यू प्रम । तो ने अपछरा सारिषी देख ने, आघी काढूं केम ॥ वै० ॥ १० ॥ थे हाव भाव किया मो स्यूं घणा, चले अङ्ग स्यू अङ्ग लगाय । पुरुष पणो हुवै मांहरै, तो रह्यो किसी पर जाय ॥ वै० ॥ ११ ॥ इन्द्रादिक सुर नर बड़ा, नार तणा हुआ दास । तिण में पुरुष प्राक्रम हुवै, ते उलटी करै अरदास ॥ वै० ॥१२॥ जेहवो कञ्चन फूलड़ो, दिसै घणो शाभन्त । फल न लागै तेहने, एहवो मुझ विरतन्त ॥ वै० ॥ १३ ॥ थे वचन कह्या ते साम्भल्या, पिण मो स्यू बोल्यो नवी जाय । हूं भोग जोग सामर्थ नहीं, तिण स्यूं रह्यो मुरझाय ॥ वै० ॥१४॥ हिवै छोड़ देवो थे मो भणी, जावाद्यो निज गेह । आश म राखो मांहरी, मो स्यू किस्यो रे स्नेह ॥१५॥

कपिला नार कुलक्षणी, तेह तणे परसंग।
और कुसत्यां परगट करूं, ते सुणज्यो मन रंग ॥ ६ ॥

स्त्री चरित्र की ढाल।

ढाल ६ ठो।

(देशी—नणदल हे नणदल)

सतियां तो सीता सारषी, ज्यांरा जिनवर किया वखाण। भविग्यण। कुमती कपिला सारषी, त्यांरी कर लीज्यो पिछाण। भविग्यण। चरित्र सुणो नारी तणा ॥१॥ छोड़ो संसार नो फन्द। भ०। शीलवन्ता नर साम्भलैं, ते पामें परम आणन्द ॥ भ० च० ॥ २ ॥ कुसती में अवगुण घणा, भाष्या श्री जिनराय। भ०। थोड़ा सा परगट करूं, ते सुणज्यो चित्त लाय ॥ भ० च० ॥ ३ ॥ नारी कूड़ कपट नी कोथली, अवगुण नो भण्डार। भ०। कलह करवा ने सांतरी, भेद पड़ावण हार ॥ भ० च० ॥ ४ ॥ देहली चढ़ती डिग पड़ें, चढ़ जावें डूंगर असमान। भ०। घर में बैठी डर करें, राते जाय मसाण ॥ भ० ॥

च० ॥ ५ ॥ देख बिलाई ओदके, सिंघ ने सन्मुख ज
। भ० । साप उसीसे दे सोवे, उन्दर स्यूं भिड़काय ॥ भ
च० ॥ ६ ॥ कोयल मोर तणी परे, बोलै मीठा बो
। भ० । भीतर कड़वी कटुक सी, बाहिर करे कलो
॥ भ० च० ॥ ७ ॥ खिण रोवै खिण में हंसै, खिण
मुख पाड़ै बूंब । भ० । खिण राचै विरचै खिणै, खिण
दाता खिण सूम ॥ भ० च० ॥ ८ ॥ धर्म करतां धुंकल
करै, ऐसी नार अलाम । भ० । बन्दर ज्यूं नचावै निज
कन्थ ने, जाणक असल गुलाम ॥ भ० च० ॥ ९ ॥ नारी
ने काजल कोठड़ी, ए बेहुं एकज रंग । भ० । काजल न
कालो करै, नारी करै शील भंग ॥ भ० च० ॥ १० ॥
नारी ने बन बेलड़ी, दोनूं एक स्वभाव । भ० । कंटक
रूंख कुशील नर, तिण स्यूं बेहुं लग ज्यात ॥ भ० च०
॥ ११ ॥ नाम छै अबला नार नो, पण सबली छै इण
संसार । भ० । सबला सुर नर तेहने, निबला कर दिया
॥ भ० च० ॥ १२ ॥ सुर नर किन्नर देवता, त्यांने
पण वश किया नार । भ० । नाख्या नरक निगोद में,
त्यांरी तो बम्य न बार ॥ भ० च० ॥ १३ ॥ नैण बैण

नारी तणा, वचनज तीखा सैल । भ० । अंग तीखो तरवार ज्यूं, इण मारयो सकल संकेल ॥ भ० च० ॥१४॥ विरची तो बाघण स्यूं बुरी, स्त्री अनरथ मूल । भ० । पाप करी पोतै भरै, अंग उपजावै सूल ॥ भ० च० ॥ १५ ॥ मोर तणी पर नेह ना, बोलै मीठा बोल । भ० । साप सपूंछोई गलै, पाड़ लेवै नर भोल ॥ भ० च० ॥ १६ ॥ पुरुष पोतै कपड़ा जिसा, नर गुण नवो भांति । भ० । नारी कातर वश पड्या, काटै है दिन रात ॥ भ० च० ॥ १७ ॥ बाघण बुरी वन मांयली, विलगी पकड़ी खाय । भ० । नारी बाघण वश पड्याँ, नर न्हासी किहाँ जाय ॥ भ० च० ॥ १८ ॥ फाटा कानांरी जोगणी तीन लोक ने खाय । भ० । जीवन्ती चुंटै कालजो, मुवाँ नर्क ले जाय ॥ भ० च० ॥ १६ ॥ नारी लखणाँ नाहरी, करै वचन री चोट । भ० । केईक सन्तजन उवरया, लीधी दया नी ओट ॥ भ० च० ॥२०॥ त्रिया मदन तलावड़ी, डूब्यो बहु संसार । भ० । केईक उत्तम नर उवरया, सत गुरु वचन सम्भाल ॥ भ० च० ॥ २१ ॥ जिम जलोक जल मांयली, तिम नारी पिण जाण । भ० । वा लागी

लोही पियै, नारी पियै निज प्राण ॥ भ० ॥ २२ ॥ राता कपड़ा पहिर ने, काठा बांध्या माथा रा केश । भ० । हाथाँ मैंदी लगाय ने, इण ठगोरी ठगियो सारो देश ॥ भ० च० ॥ २३ ॥ लोक कहै ग्रह बारमों, लागाँ हणै प्राण । भ० । न्हाखे नरक निगोद में, नारी नव ग्रह जाण ॥ भ० च० ॥ २४ ॥ इण संसार असार में, तिण में मोटी गाल । भ० । माणस खोडै मारीजै, गावै टोडर माल ॥ भ० च० ॥ २५ ॥ नगर उजोणी नो राजियो, हरचन्द नामे राय । भ० । सोमिला ऊपर मोहियो, नाख्यो नंदिये वहाय ॥ भ० च० ॥ २६ ॥ जहर दियो निज कंथ ने, नाम जसोदा नार । भ० । कंथ मार काष्टे चढ़ी, गई नरक मझार ॥ भ० च० ॥२७॥ ब्रह्मदत्त चक्रवर्त बारमों. तेहनी चुलणी मात । भ० । विषै री वाही थको, करवा मांडी पुत्र नी घात ॥ भ० ॥ २८ ॥ परदेशी राजा तणी, सूरिकंथा नार । भ० । स्वार्थ न पूगो जाण ने. मारयो निज भरतार ॥ भ० ॥ २९ ॥ बरस बारै बन सेविया, लिछमण ने श्रीराम । भ० । दशरथ दुख सह्या घणा, तेतो केकई रा काम ॥ भ० च० ॥ ३० ॥ कोणक

॥ दोहा ॥

नर नारी दोनूं सरिया मिल्यां, अधिको वधे सनेह।
सुगणा ने निगुणां मिले, तो तटके तूटे नेह ॥ १॥
सेठ दरपे सर्व नार स्यूं, तिण ने उपसर्ग उपज्यो जाण।
एक मास में च्यार पोसा करे, राते जाय मसाण ॥ २॥
कर्म धर्म संभालता, सुखे गमावे काल।
किण विध उपसर्ग उपजे, किण विध आवे आल ॥ ३॥
धात्रिवाहन राजा तणी, पटराणी अभया नार।
रूपे रम्भा सारषी, सुख भोगवे संसार ॥ ४॥
तिण चम्पानगरी बाहिरे, ईशाण कूण रे मांय।
बाग एक छै रलियामणो, छै उत्तम सुखदाय ॥ ५॥
ते फल्यां फूल्यां रहे सदा, पिण वसन्त ऋतु विशेष।
तिहां नर नारी अनेक क्रीड़ा करे, सुख पामे निजरां देख ॥६॥
अभया राणी तिण समे, आई वसन्त ऋतु जाण।
बाग सुण्यो फूल्यो फल्यो, जब बोले एहवी वाण ॥ ७॥

ढाल ७ मी।

(देशी—तेजु व्हेज्या हो बाले साड़ी सोला देश)

आयो २ हे सखी कहीजे मास वसन्त, ऋतु लागे छै

अतही सुहामणीजी ॥ १ ॥ फूल्या २ हे सखी पाड़ल फूल, वले फूल्या छै रूंख धवला ने केतकी जी ॥ २ ॥ सहु नर नारी हो सखी रहवा ने महमंत, ऋतु लागै छै अतही सुहामणीजी ॥ ३ ॥ फूल्या २ हे सखी फूल गुलाव, वले फूल्या छै रुंख केवड़ा तणा जी ॥ ४ ॥ न्हाना मोटा हे सखी फूल्या रूंख सताव, वले पान फूल फल कर ढलिया घणाजी ॥ ५ ॥ फूली फूली हे सखी मोरी वनराय, आंबा लागी छै मांजर रलियामणी जी ॥ ६ ॥ महक रही छै हे सखी तिण बाग रे मांय, वले गन्ध सुगन्ध लागै सुहामणी जी ॥ ७ ॥ ठामै २ हे सखी कोयल करै टहुकार, वले मोर झिंगोर शब्द करै घणाजी ॥ ८ ॥ चकवा चकवी हे शब्द करैं श्रीकार, वले अनेक शब्द पपैया तणा जी ॥ ६ ॥ एहवो सुणियो हे सखी मैं तो बाग सरूप, नन्दन वन नी उपमा जेहने जी ॥ १० ॥ ते वन देखण हे सखी हुई मुझ चूंप, परत्यक्ष नैणा निजरे देखूं तेहने जी ॥ ११ ॥ राजा साथे हे सखी बाग रे मांह, क्रीड़ा करूं जाय ऋतु वसन्त नी जी ॥ १२ ॥ एहवी इच्छा हे सखी पूरूं

बाग में जाय, एहवी लीला करण री मो मन गमो जी
॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

चलती सखियाँ इम कहै, करवो छै तुम हाथ।
रूड़ी रीते राजा स्यूं वीनवो, ले ज्यावो महाराजाने साथ॥

इम सुण ने हरषित हुई, कहै राय समीपे आय।
आप बसन्त ऋतु ना सुख भोगवो, रूड़ी रीत स्यूं जाय ॥२॥

ए वचन सुणी राय हरषियो, सेवग पुरुष बुलाय।
चतुरङ्गणी सेन्याँ सज्ञ करो, म्हांरी आगन्या सूंपो आय ॥३॥

राजा पड़हो फेरावियो, चम्पा नगर मझार।
नर नारी सहु बागमें आवज्यो, रूड़ी रीत स्यूं करी शिणगार

चाकर सुण तिमहिज कियो, पाछी आगन्या सूंपी आय।
जब राजा स्नान मर्दन करी, पहरया आभूषण ताय ॥५॥

राय हस्ती बैसि निसरयो, चतुरङ्गणी सेन्या ले लार।
अभया राणी पिण नीसरी, सज्ञ सोलै शिणगार ॥ ६ ॥

राजा आयो बाग में, बैठो सिंघासण ताम।
मत और बीजा आय बैठा सहु, आप २ तणै सब ठाम ॥ ७ ॥

अभया राणी निज परिवार स्यूं, आय बैठी बाग रे मांय।
विषय रंग राची थकी, तिण रे परभव चिन्ता नांय ॥८॥

ढाल ८ मी।

(देशी – तुमे चरित्र सुणो नारी तणा)

इहां आई छै कपिला ब्राह्मणी, तिणरे अभया राणी स्यूं प्रीत रे। इण कपिला तणै परसंग थी, अभया राणी पिण होसी फजीत रे ॥ तुमे चरित्र सुणो नारी तणा ॥ १ ॥ यांरी जोड़ी मिली छै सारषी, ए दोनूं कुपातर नार रे। अभया देसी उपसर्ग सेठ ने, तिणरो आगै चालसी इधकार रे ॥ तु० ॥ २ ॥ बड़ा २ सेठ सेन्यापति, त्यांरे साथे पिण निज परिवार रे। ते पिण आया छै बाग में, रूड़ी रीत सूं कर शिणगार रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ सेठ सुदर्शण आयो बाग में, साथे मनोरमा नार रे। चारूं पुत्र सेठ रे पासती, जाणक देव-कुमार रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ गहणा आभूषण पहर ने, ते दीठां मे आणन्द रे। सुदरशण नारा

सेठां में, शोभे जाणे पूनमचन्द रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ राणी बैठी झरोखे बाग में, तिहां आयो सुदर्शण सेठ रे। च्यार पुत्र सहित मनोरमा, आय उभा महलां रे हेठ रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ अभया राणी जाली रे आंतरे, तिण दीठो सुदर्शण सेठ रे। च्यार पुत्र सहित मनोरमा, राणी दीठा महलाँ रे हेठ रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ राणी रूप देख मुरछित हुई, करवा लागी मन में विचार रे। एहवा पुरुष थकी सुख भोगवे, धन छै ते सुभाग्य नार रे ॥ तु० ॥ ८ ॥ एहवा पुत्र एह थकी उपना, जाणक देव कुमार रे। एहवा पुत्र ने एहवो कंथ छै, धन तिणरो जमवार रे ॥ तु० ॥ ९ ॥ जब राणी पूछै दासी भणी, ए कुण पुरुष कुण नार रे। च्यार पुत्र छै तिण रे पारखती, जाणक देव कुमार रे ॥ तु० ॥ १० ॥ दासी कहै सुदरशण सेठ छै, मनोरमा छै जेहनी नार रे। च्यारूं पुत्र छै एहना, माग सेठां रा सिरदार रे ॥ तु० ॥ ११ ॥ कपिला ब्राह्मणी तिण अवसर मुंह मचकोड़ बोली ताय रे। च्यारूं पुत्र नहीं छै एहरा, ते थांने खबर नहीं छै काय रे ॥ तु० ॥ १२ ॥ देव धल्या मूका रूंख रे, फल फूल न लागे काय रे।

ज्यूं पुरुप नपुंसक तेह स्यूं, पुत्र नी उत्पत्ति किम होय रे ॥ तु० ॥ १३ ॥ नपुसक छै सेठ सुदरशणो, तिण री शंका नहीं छै लिगार रे। ए कपिला रा वचन राणी सुणी, छानी पूछा करी तिण वार रे ॥ तु० ॥ १४ ॥ अभया कहै कपिला भणी, थे नपुंसक जाण्यो केम रे। ते वात कही सर्व मांड ने, अरूबरू हुई जेम रे ॥ तु० ॥ १५ ॥ अभया राणी हंस ने कहै, कपिला तू मूढ़ गिंवार रे। तो ने पुरुप ने वश करवा तणी, कला न दिसै लिगार रे ॥ तु० ॥ १६ ॥ सेठ सुदरशण तो ने छल गयो, झूठो बोलि तिण वार रे। तो ने पुरुप तणी नहीं पारखा, भूल गई भरम गिंवार रे ॥ तु० ॥ १७ ॥ जब कपिला कहै अभया राणी भणी, आप तो महा चतुर सुजाण रे। जो सुदरशण स्यूं सुख भोगवो, तो थांरो बोल्यो परमाण रे ॥ तु० ॥ १८ ॥ जब अभया राणी कहै कपिला भणी, सेठ आणूं मांहरै हजूर रे। संसार ना सुख भोगवूं, तो थांरै मुंढ़ै पाडूं धूड़ रे ॥ तु० ॥ १६ ॥ कहै बड़ा २ सुर नर जोगी जती, वश किया नारी नी जात रे। बन्दर नी परै रोलव्या, तो सेठ कितिएक बात रे ॥ तु० ॥ २० ॥

राधा मोह लियो श्रीकृष्ण ने, आपरे वश कियो जाण रे। अहिल्या इन्द्र ने वश कियो, नारी एहवी छै चतुर सुजाण रे॥ तु० ॥ २१ ॥ नारी घणा पुरुषां ने वश किया, त्यांरो कहता न आवे पार रे। तो स्यूं एक पुरुष वश नहीं हुवो, इण लेखे तू मूढ गिंवार रे ॥तु०॥२२॥ कपिला कहै राणी भणी, सेठ ने वश करम्यो मोय रे। तो थांने चतुर विचक्षण जाणस्यु, नहीं तो मो सरीषा थे पिण होय रे॥ तु० ॥ २३ ॥ जब राणी कहै कपिला भणी, हूं तो तो सरीषी नहीं छूं नाम रे। सेठ थकी सुख भोगवूं, तो अभया राणी म्हांरो नाम रे॥ तु० ॥ २४ ॥ जब कपिला वद २ ने कहै, थे गाढ़ म करो लिगार रे। सेठ सुदरशण ने वश करे, एहवी नहीं छै जगत में नार रे॥ तु० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

कठाम सेठ नपुंसक हुवै, ते मोने खबर न काय।
जो सेठ सुदरशण पुरुष छै, तो न सकै कोई चलाय ॥१॥

कदा मेरू चल विचल हुवै, चले पच्छिम ऊगै भाण।
पिण सेठ चलायो नहीं चलै, जो मिलै अपछरा आण ॥२॥

तिण कारण राणीजी तुम्हें, मत करो सेठ री आश।
मैं खप कोधी तिण री घणी, तिण में देख लियो तमास ॥

कपिला ने राणी तणै, पड्यो विवाद अत्यन्त।
पिण राणी हठ मूंकै नहीं, करवो कुण विरतन्त ॥ ४ ॥

गत सारू मत ऊपजै, करै अनेक उपाय।
जिण री थित पूरी थई, ते मेटी किण विध जाय ॥ ५ ॥

वसन्त ऋतु खेल्यां पछै, राणी आई महलां मांय।
सेठ मिलण रे कारणै, करै अनेक उपाय ॥ ६ ॥

डाव कोई लागै नहीं, करै अनेक उपाय।
जब पण्डिता धाय स्यूं, तिण ने कहै वेग बुलाय ॥ ७ ॥

ढाल ६ मी।

(देशी—अभया राणी कहै धायने)

अभया राणी कहै धाय ने, म्हांरी वात सुणो चित्त ल्याय हे माय। थे बालक स्यूं मोटी करी, तो स्यूं वात
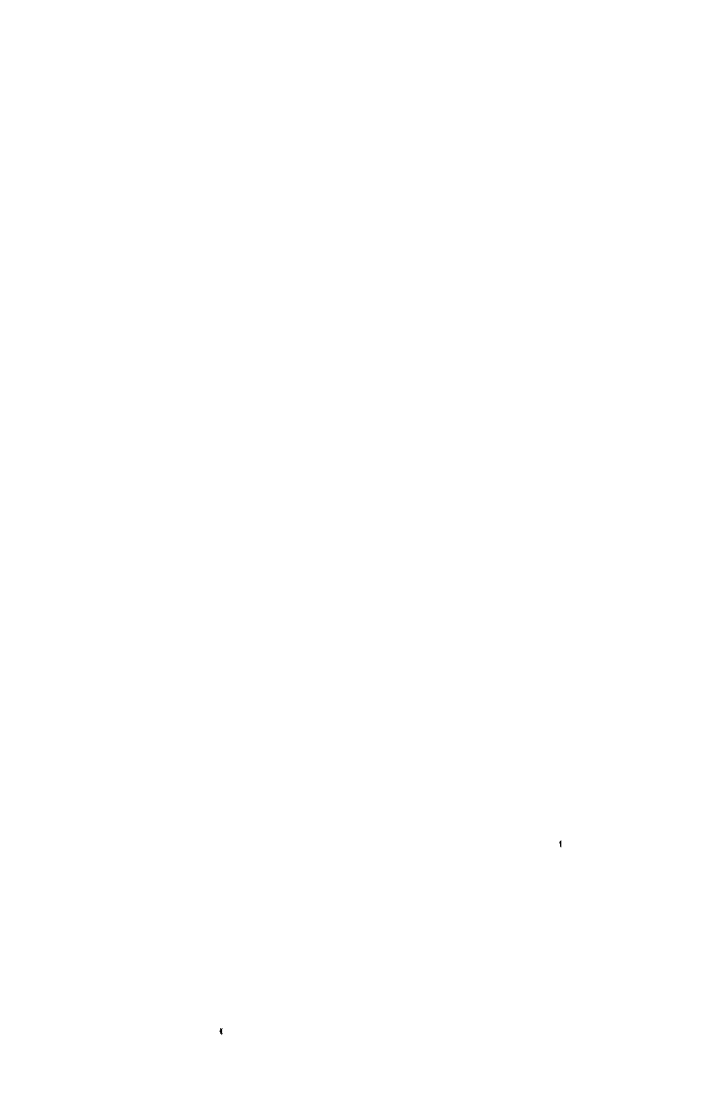
तृषा न्हासी गई, निश दिन रहूं छूं उदास हे माय।
म्हांरो मन कठेंई लागै नहीं. तिण स्यूं कहूं छूं तुमारे पास
हे माय ॥ अ० ॥ ६ ॥ हूं मोही सुदरशण सेठ स्यूं, तिण
स्यूं लाग्यो म्हांरो रङ्ग हे माय। सेठ स्यूं मिलूं नहीं त्यां
लगै, दिन २ गलै छै म्हांरो अंग हे माय ॥ अ० ॥१०॥
मैं कपिला ने वद २ कह्यो, वश करूं सुदरशण सेठ हे
माय। सुख भोगवू नहीं सेठ स्यूं, ए वचन जाय म्हारो
हेठ हे माय ॥ अ० ॥ ११ ॥ ए वचन तो ज्यांही रह्यो,
म्हांरी वंछा पूरण हाम हे माय। ए मनोरथ पूरयां विना,
म्हांरै हाथ न लागै काम हे माय ॥ अ० ॥ १२ ॥ ए
वात कही तुझ आगलै, अन्तर न राख्यो कोय हे माय।
हिवै सेठ सुदरशण भणी, वेग मिलावो मोय हे माय ॥
अ० ॥ १३ ॥ सौ वातां एक वात छै, ते कही कठा लग
जाय हे माय। लाड पूरो माय मांहरो, तो जाणूं साची
धाय हे माय ॥ अ० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

वचन सुणी राणी तणा. माथो धूण्यो धाय।
मीठे वचने राणी भणी, धाय कहै समझाय ॥ १॥

शील विना हे वाई फिट २ करैं सहु लोय, अपजश अकीरत होय। नर नारी मुह मचकोड़सी जी ॥ १० ॥ पिता सूंपी हे वाई घणा पुरसां री साख, तिण ऊपर निसचो राख। पुरस तणी सेवा करो जी ॥ ११ ॥ पर पुरस हे वाई जाणो भाई समान, ए सीख हमारी मान। ज्यूं मास वधें थांरी जगत में जी ॥ १२ ॥ घणी शोभै है चन्द्रमा स्यूं रात, तिम नारी नी जात। शील थकी शोभै घणी जी ॥ १३ ॥ जळ विन नदी हे नहीं शोभै लिगार, तिम नारी शिणगार। शील विना शोभै नहीं जी ॥ १४ ॥ शील विना हे वाई लागै कुल ने कलंक, ज्यूं राजेसर लङ्क। कुल ने कळङ्क चढ़ावियो जी ॥ १५ ॥ शील विना हे वाई रुलियो अनेक, मैंणरेहा ने विशेष। मणरथ राजा मर नरके गयो जी ॥ १६ ॥ शील थकी हे सीता हुई कुळवन्ती नार, ते गई जनम सुधार। कुल निरमल कियो आपणो जी ॥ १७ ॥ शील थकी हे वध्यो द्रौपदी रो चीर, तिण पाल्यो निरमल शील। जनम सुधारयो आपरो जी ॥ १८ ॥ शील विना हे वाई घणा नर नार, गया जमारो हार। पड़िया छै नरक निगोद में

जी ॥ १६ ॥ शील थकी हे बाई घणा नर नार, गर ब जमारो सुधार। त्यांरी जश कीरत छै लोक में जी॥ २० ॥ शील बिना हे बाई जसोमति नी आव, उतर गई छै सताव। शील बिना एक पलक मे जो ॥ २१ ॥ इमां शील हे बाई पालो मन चित ल्याय, पाछो मन समझाय। बांछ्या तजो पर पुरस नी जी ॥ २२ ॥ म्हांरी मत म्हं हे बाई सीखावूं छूं तोय, निज कुल सामो जोय। पुरस परायो परहरो जी ॥ २३ ॥

दोहा।

धाय वचन राणी सुण्या, मूल न मानी बात।
एहलोक परलोक स्यूं, डरी नहीं तिलमात ॥ १ ॥
आशा अलुधी हूं रही, जो हूं वश न करूं सेठ।
कपिला वचन ऊंचो रहै, म्हांरो वचन रहै हेठ ॥ २ ॥
हिवे राणी कहै छै धाय ने, थे बेण कह्या ते न्याय।
पिण सेठ सुदरशण तेह बिना, मो स्यूं रह्यो नहीं जाय ॥ ३ ॥
सेठ सुदरशण स्यूं सुख भोगवूं, म्हांरो ऊपर आणूं बोल।
पिण कपिला ब्राह्मणी तिण कन्हे, रहै हमारो तोल ॥ ४ ॥

वचन काजै वड़ा २ राजवी. करैं अनेक अकाज।
तो एक अकारज करतां थकां. मोने किसी छै लाज ॥५॥

ढाल ११ मी।

(देशी—तोरण आवै)

वचन काजे हो धाय जी हरचन्द वड़ वीर. आण्यो डूम घर नीर। नीच तणी सेवा करी जी ॥ १ ॥ वचन काजे हो. लिछमण ने श्रीराम. त्यांरो परसिद्ध नाम। बारै बरस वन में रह्या जी ॥ २ ॥ वचन काजे हो हणुमंत वड़ वीर, गयो लङ्का रे तीर। सीताजी रै सन्देसड़ै जी ॥ ३ ॥ रामजी दीधो हो वभीषण ने लङ्का नो राज। करी रावण रो अकाज। लङ्का वभीषण ने थापियो जी ॥ ४ ॥ पाँच पाण्डव हो धायजी वचना रे काज। गयो ज्यांरो राज। नगर वैराट सेवा करी जी ॥ ५ ॥ वचन चूक्या हो त्यांरी नहीं [illegible]. तिणरो ओहिज मर्म। तिण स्यूं खपूं [illegible] ने जी ॥ ६ ॥

वचन हो राखी [illegible] वले वाय

घेठाई वाई मन [illegible] वा

जी ॥ १९ ॥ शील थकी हे बाई घणा नर नार, गया जमारो सुधार। त्यांरी जश कीरत छै लोक में जी ॥ २० ॥ शील बिना हे बाई जसोमति नी आब, उतर गई छै सताव। शील बिना एक पलक मे जी ॥ २१ ॥ इसो शील हे बाई पालो मन चित ल्याय, पाछो मन समझाय। वांछया तजो पर पुरस नी जी ॥ २२ ॥ म्हांरी मत स्यू हे बाई सीखावूं छूं तोय, निज कुल सामो जोय। पुरस परायो परहरो जी ॥ २३ ॥

दोहा।

धाय वचन राणी सुण्या, मूल न मानी बात।
एहलोक परलोक स्यूं, डरी नहीं तिलमात ॥ १ ॥
आशा अलुधी हूं रही, जो हूं वश न करूं सेठ।
कपिला वचन ऊंचो रहै, म्हांरो वचन रहै हेठ ॥ २ ॥
हिवै राणी कहै छै धाय ने, थे वैण कह्या ते न्याय।
पिण सेठ सुदरशण तेह बिना, मो स्यूं रह्यो नहीं जाय ॥ ३ ॥
सेठ सुदरशण स्यूं सुख भोगवूं, म्हांरो ऊपर आणूं बोल।
कपिला ब्राह्मणी तिण कन्हे, रहै हमारो तोल ॥ ४ ॥

वचन काजै बड़ा २ राजवी, करै अनेक अकाज।
तो एक अकारज करतां थकां, मोने किसी छै लाज ॥५॥

ढाल ११ मी।

(देशी—तोरण आवै)

वचन काजे हो धाय जी हरचन्द बड़ वीर, आण्यो डूम घर नीर। नीच तणी सेवा करी जी ॥ १ ॥ वचन काजे हो, लिछमण ने श्रीराम, त्यांरो परसिद्ध नाम। बारै वरस वन में रह्या जी ॥ २ ॥ वचन काजे हो हणुमंत बड़ वीर, गयो लङ्का रे तीर। सीताजी रै सन्देशड़े जी ॥ ३ ॥ रामजी दीधो हो वभीषण ने लङ्का नो राज। करी रावण रो अकाज। लङ्का वभीषण ने थापियो जी ॥ ४ ॥ पॉच पाण्डव हो धायजी वचना रे काज। गयो ज्यांरो राज। नगर वैराट सेवा करी जी ॥ ५ ॥ वचन चूक्या हो त्यांरी नहीं रही शर्म, तिणरो ओहिज मर्म। तिण स्यूं खपूं छूं म्हारै वचन ने जी ॥ ६ ॥ एहवा वचन हो राणी रा सुण धाय, फेर बोलै वले वाय। इसड़ी धेठाई बाई मत करो जी ॥ ७ ॥ एहवा वचन हो सुणसी

महाराज, तो थासी बड़ो रे अकाज। तुम ने मोत कुमोते मारसी जी ॥ ८ ॥ और सगलो हे बाई तुम परसङ्ग, ते पिण होसी भङ्ग। इण बात में शङ्का को नहीं जी ॥ ९ ॥ तिण कारण हे बाई थाने कहूं छूं ताय, निज मन ल्यो समझाय। लीधी टेक पाछी परहरो जी ॥ १० ॥ सेठ जी ने हो धाय तुमे ल्यावो छिपाय। ज्यूं नहीं जाणे राय। पछै छानो पिण पोहोंचायज्यो जी ॥ ११ ॥ छानो आणी हो छानो दीज्यो पहुंचाय, ते किम जाणसी राय। थे चिन्ता करो किम कारणै जी ॥ १२ ॥ धाय भाखै हे बाई छानी रहसी किम बात, राय करसी तुम घात। ए बात छिपाई बाई ना छिपै जी ॥ १३ ॥ पर पुरस हे बाई जाणो ल्हसण समान, खावै खुंणै बैसाण। जिहाँ जाय तिहां परगट हुवै जी ॥ १४ ॥ सेठ चाहवो हे बाई चम्पा नगर मझार, थे राय तणी पटनार। ते तो छिपाई बाई ना छिपै जी ॥ १५ ॥ होणहार होणी हे ज्यूं होसी म्हांरी धाय, सेठ ने ल्यावो वेग बुलाय। नहीं तो कण्ठ कटारी खावि मरूं जी ॥ १६ ॥ धाय सुणी ने हो राणी रा वैण, न्हाखै आंसूड़ा नैण। कर मसलै माथो धूणती

जी ॥ १७ ॥ मोटा कुल में हो होवै इसड़ी वात, तो किहां थी कुशलात। कोई विघ्न होसी इण राज में जी ॥ १८ ॥ पूरव सेव्या हो उदे आया दिसै पाप, होसी वहुलो सन्ताप। दुख में दुख उपनो घणो जी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

हिवै धाय करै विचारणा, राणी मूल न मानै वात।
जो नहीं ल्याऊं सेठ ने, तो राणी करै अपघात ॥ १ ॥
तो हूं ल्याऊं सेठ ने, करी अनेक उपाय।
ज्यूं राणी कुशले रहै, पछै वणसी ते वण ज्याय ॥ २ ॥
एहवी करी विचारणा, धाय कहै छै तास।
थे चिन्ता मूल करो मती, हूं सेठ ल्याऊं तुम पास ॥ ३ ॥
जव राणी कहै इण वात री, ढील न करणी काय।
सेठ विना एका घड़ी, मो स्यूं रह्यो न जाय ॥ ४ ॥

ढाल १२ मी।

(देशी—छाभ मूलादिक नो टोरो)

धाय कहै छै हे कामातुरी, तूं तो भोली दीसै पूरी।

सेठ नहीं छै कपड़ो किराणो, मोल लेई तुम आगे आ. ॥ १ ॥ सेठ किम मानसी म्हांरी बात. तुरत किम आवसी म्हांरी साथ। दश दिन तो थे सुमतावो, सेठ ने ल्याः करि ने उपावो ॥ २ ॥ दश दिना रो राणी दुवो दीवो. जब धाय बीड़ो झालि लीधो। हिवै धाय तिहां थी चाली. सेठ जी रे घर सामीं चाली ॥ ३ ॥ धाय आई छै सेठ आवासे, तिण रे फिरै छै आसे पासे। धाय करे छै अनेक उपाय, सेठ रे ऊपर खेलै डाव ॥ ४ ॥ सेठ ने पकड़वा रे दाव, पिण महलां न दीसै लगाव। एकदा सेठ बारै आवे, धाय देखी ने सामी जावै ॥ ५ ॥ सेठ परनारी सामो न जोवै, आगै हर कोई नारज होवै। आगै कपिला तणो विरतन्त देख, नारी जात स्यूं डरै विशेष ॥ ६ ॥ परनारी स्यूं नहीं करै बात, तिण स्यूं बोलै नहीं तिलमात। वले नहीं करै तिण रो संग, तिहां होय गयो मन भंग ॥७॥ नारी जाति स्यूं होवै उदास, किणही स्यूं न करै विश्वास। वो पर स्त्री घर मांहें, किण ने आवण न देवै घर मांय ॥ ८ ॥ तिण स्यूं सेठ तणा घर मांय, धाय आय पिण सकै नांय। धाय करै विमामण तास, सेठ करतो न

दीसै विश्वास ॥ ६ ॥ इण ने बोलाऊं तो बोलै नांय, और दाव न लागै कांय । धाय करवा लागी सन्ताप, म्हांरै उदै आया दीसै पाप ॥ १० ॥ इम काल कितोइक वीतो, सेठ रहै नारी स्यूं विहतो । पखी रो करै उपवास, राते रहै मसाण में तास ॥ ११ ॥ धाय सेठ ने जातो देख, हरषित हुई मन विशेष । सेठ ने लेऊं बांध उठाय, मेलूं राणी समीपै जाय ॥ १२ ॥ आ तो सूल घणी छै वात्त, राणी आडी पोलां सात । वैठा रहै पोलिया तांह, पुरुष ने जावा देवै नांह ॥ १३ ॥ सात पोलिया में एक देखै, तो म्हांरी करै खरावी विशेषैं । जो राय जाणै म्हांरी वात, तो कर न्हाखै म्हांरी घात ॥ १४ ॥ तो हिवै एहवो करूं उपाय, पहली पोलियो वश करूं जाय । त्यांने देऊं भरम भुलाय, उलटा मोस्यूं डरै ताय ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

एहवी करी विचारणा, गई कुम्हार ने गेह ।
धाय कहै कुम्हार ने, वात हमारी सुणेह ॥ १ ॥

धाय कहै छै तास रे, सुण रे मूरख पोलिया।
पुतलो पटक्यो नाश रे, खण्ड २ किया तेहना ॥ ८ ॥
वले वोली धाय रिसाय रे, तें वरत राणी रो खण्डियो।
कहस्यूं राणी ने जाय रे, जीवां मरावस्यूं तो भणी ॥६॥
ए वचन सुणी तिणवार रे, पग पकड्या तिण धाय ना।
माता करो उपगार रे, ए गुण कदेय न वीसरूं ॥१०॥
इण विध पुतलो आण रे, पहलो पोलियो वश कियो।
हिवै इम सातूं जाण रे, धाय किया वश आपणै ॥ ११ ॥
एहवो चरित्र वणाय रे, पोलिया सातू वश किया।
निरभय जावै आय रे, धाय ने कोई वरजै नहीं ॥१२॥

॥ दोहा ॥

पोलिया सातूं वश किया, हुई नचिन्ति धाय।
सेठ ने कांधै वैसाण ने, किण विध ल्यावै धाय ॥ १ ॥

ढाल १४ मी।

(देशी—ओपड्यो रे कर्म बिटम्बणा)

दूध देखी मंजारका, फिरै छै ओली दोली रे। सेठ

सुदरशण ऊपरं, धाय आय फिरी छै टोली रे। जोयज्यो
रे कर्म विटंबणा ॥ १ ॥ इण रीते धाय फिरतां थकां,
नीठ जोग मिल्यो छै आयो रे। अशुभ कर्म उदै हुवां,
किण स्यूं मेट्या नहीं जायो रे ॥ जो० ॥ २ ॥ सेठ
निरभय बैठो मसाण में, घोर विहामणी जागां रे। वातै
रात डरावणी, दुष्ट जीव ते बोलण लागा रे ॥ जो० ॥३॥
एहवा शब्द सुण्या सेठ तिण समै, तो ही ध्यान थकी
नहीं चूकै रे। दृढ़ धर्मी दृढ़ आतमा, लीधा नेम न मूकै
रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ मेरु चलै पृथवी चलै, चल जावै
चन्द ने सूरो रे। पिण सेठ चलायो नहीं चलै, धर्म थी
थिय धरमी छै पूरो रे ॥ जो० ॥ ५ ॥ रात समै तिण
अवसरै, सेठ रह्यो छै धर्म ध्यानो रे। तिण अवसर धाय
पण्डिता, आई सेठ कनै धर मानो रे ॥ जो० ॥ ६ ॥
साहसिक धाय पण्डिता, सेठ ने लीधो उठायो रे। कांधै
बैसाणी ने निकली, आण म्हेल्यो महल रे मांयो रे
॥ जो० ॥ ७ ॥ आय कह्यो राणी अभया भणी, सुणज्यो
बाई मुझ वातो रे। हूंस पूरी करो थांहरी, सेठ ल्याई
कुशलातो रे ॥ जो० ॥ ८ ॥ वात कही सर्व मांड ने,

राणी समीपै धायो रे। राणी सुण हरषित हुई, आणन्द अङ्ग न मायो रे॥ जो० ॥ ९ ॥ काया प्रफुल्लित थई, विकसी सर्व रोमरायो रे। धन दिहाड़ो धन घड़ी, सेठ आयो महलाँ रै मांयो ॥ जो० ॥ १० ॥ सेठ कनै जावा भणी, राणी पहरया आभूषण अपारो रे। अभया राणी हरषित हुई, किया सोलै शिणगारो रे ॥ जो० ॥ ११ ॥

दोहा।

स्नान मर्दन राणी किया, चोवा चन्दन लेप लगाय।
खसबोई विविध प्रकार नी, तिण स्यूं महक रही छै ताय ॥

ढाल १५ मी।

(देशी—सकोमल लाल)

अभया रूप रसाल, जाणक वीजली चमत्कार। सकोमल लाल ॥ जाणक अपछर सारषी ए ॥ १ ॥ अङ्ग उपांग श्रीकार, किया सोलै शिणगार ॥ स० ॥ जाण के ऊभी देवांगणा ए ॥ २ ॥ जोवन चालै वेश, तिण शिरना गूंथ्या केश। स०। काया कञ्चन सारषी ए ॥ ३ ॥ वाजै जांझर ना झणकार, त्यांरा शब्द घणा श्रीकार। स०।

सुख भोगवूं ए ॥ १४ ॥ अभया राणी छोड़ी मान, दियो घणो सनमान । स० । सेठ स्यूं अभया राणी विनवै ए ॥ १५ ॥ हूं अभया राणी छू एह, म्हांरो लागो छै थाँ स्यूं नेह । स० । तिण स्यूं धाय ले आई छै आपने ए ॥ १६ ॥ म्हारो धन दिहाड़ो छै आज, महलाँ पधारो राज । स० । सफल जनम करो हम तणो ए ॥ १७ ॥ आगोतर रे काज, तपस्या करो छो राज । स० । ते तप तुम्हारो इहां फल्यो ए ॥ १८ ॥ मोस्यूं भोगवो भोग रसाल, जोवो नैण निहाल । स० । आगोतर जनम किण देखियो जी ॥ १९ ॥ आ मानो म्हांरी अरदास, भोगवो सुख विलास । स० । आशा पूरो अब मांहरी जी ॥२०॥ हूं छूं तुमारी दास, मो ने यूंही राखो निराश । स० । अरज सुणो अभया राणी तणी जी ॥ २१ ॥ नीठ मिल्यो छै जोग, भोगवो मोस्यूं भोग । स० । जनम सफल करो मांहरो जी ॥ २२ ॥ हूं धन पिण देस्यूं अपार, हीरा रतन जुहार । स० । कमियन राखूं किण बात री जी ॥ २३ ॥ बोली वचन अनेक, पिण सेठ न मानी एक । स० । चले चूको नहीं धर्म ध्यान स्यूं जी ॥ २४ ॥

ढाल १८ मी।

(देशी—कुमर इसो मन चिन्तवै)

सेठ इसो मन चिन्तवै. शील व्रत हो वरतां माहिं प्रधान। शील थकी सद्गत लहै. अनुक्रमे हो पामै मुक्ति निधान। सेठ इसो मन चिन्तवै ॥१॥ ग्रह नक्षत्र तारां वृन्द में, घणो शोभै हो जिम मोटो चन्द। रतना में वैडुर्य मोटको. फूलाँ में हो मोटो फूल अरविन्द ॥ से० ॥ २ ॥ रतनाकर समुद्र वड़ो, आभूषण माहें हो माथा रो मुगट। वस्त्राँ में खूम वस्त्र मोटको. नदियाँ में हो सीतोदा नो पट ॥ से० ॥ ३ ॥ इत्यादिक शीलव्रत ने उपमा. सूत्र मांहें हो जिनजी भाषी वत्तीस। व्रत चोखे चित पालसी. तिणरी करणी हो जाणो विश्वावीस ॥ से० ॥ ४ ॥ शील स्यूं विष अमृत हुवै. शील सेती हो समुद्र नो थाग। वेर विघ्न टलै शील थी. शील पालै हो जेह ना मोटा भाग ॥ से० ॥ ५ ॥ सुर नर देव सेवा करै, शील सेती हो सिंघासण थाय। अनेक विघ्न टलै शील थी. शील रा गुण हो पूरा कह्या नहीं जाय ॥ से० ॥ ६ ॥ शील स्यूं अनेक जीव उद्धरया. कहतां २ हो नहीं आवै त्यांरो

॥ दोहा ॥

अभया राणी रङ्ग महल में, सेठ सुदरशण पास ।
काम किलोल करती थकी, करै घणी अरदास ॥ १ ॥

सेठ ध्यान पूरो कियो, देखि नैण निहाल ।
चरित्र देख अभया तणा, सेठ कम्पण लागो तत्काल ॥२॥

उपसर्ग मोटो उपनो, मन गमतो परीसो जाण ।
जब सेठ मन गाढ़ो कियो, जाणक मेरू समान ॥ ३ ॥

गमतो परीसो अस्त्री तणो, सहणो घणो दुरलभ ।
मन दृढ़ परणामा पुरुष ने, सहणो घणो सुलभ ॥ ४ ॥

अणगमतो हुवै, उपसर्ग उपजै आय ।
पुरुष सामां मंडै, कायर भागी जाय ॥ ५ ॥

भव स्थित पाकी तेहनी, पतलो मोहिनी कम ।
त्यांने सहणो सोहिलो, ते किम छोड़े जिनधर्म ॥ ६ ॥

अभया उभी देख नं, सेट थयो सावधान ।
शील तणा गुण चिन्तवे, ते गुणां मृरत दे कान ॥ ७ ॥

ढाल १६ मी ।

(देशी—कुमर इसो मन चिन्तवै)

सेठ इसो मन चिन्तवैं, शील व्रत हो बरतां माहिं प्रधान । शील थकी सद्गत लहै, अनुक्रमे हो पामै मुक्ति निधान । सेठ इसो मन चिन्तवै ॥१॥ ग्रह नक्षत्र तारॉ वृन्द में, घणो शोभै हो जिम मोटो चन्द । रतना में वैडुर्य मोटको, फूलाँ में हो मोटो फूल अरविन्द ॥ से० ॥ २ ॥ रतनाकर समुद्र वड़ो, आभूषण माहें हो माथा रो मुगट । वस्त्राँ में खूम वस्त्र मोटको, नदियाँ में हो सीतोदा नो पट ॥ से० ॥ ३ ॥ इत्यादिक शीलव्रत ने उपमा, सूत्र मांहें हो जिनजी भाषी वत्तीस । व्रत चोखे चित पालसी, तिणरी करणी हो जाणो विश्वावीस ॥ से० ॥ ४ ॥ शील स्यूं विष अमृत हुवै, शील सेती हो समुद्र नो थाग । वेर विघ्न टलै शील थी, शील पालै हो जेह ना मोटा भाग ॥ से० ॥ ५ ॥ सुर नर देव सेवा करै, शील सेती हो सिंघासण थाय । अनेक विघ्न टलै शील थी, शील रा गुण हो पूरा कह्या नहीं जाय ॥ से० ॥ ६ ॥ शील स्यूं अनेक जीव उद्धरया, कहताँ २ हो नहीं आवै त्यांरो

अङ्ग सूं अङ्ग भीड़े लियो, डीगियो नहीं तिलमात।
दोय मास रा बालक भणी, जाणक फरशे मात ॥ ७ ॥

ढाल १७ मी।

(देशी—सकोमल लाल)

अभया वारम्वार, करै विकलाई अति घणी ए। विषय अन्ध हुई तिणवार। तिणरे ममता लागी विषय तणी ए। जिहो सेठ सुदरशण नाम। दृढ़ कर लीधी तिण आतमाजी ॥ १ ॥ सेठ ने नहीं छोड़ै ताम, अलगी न होवै तेह स्यूं रे। तिण रा विषै सेवण रा प्रणाम, गाढ़ी लाग रही छै तिणरी देह सू रे ॥ जि० ॥ २ ॥ हिवै सेठ करै विचार, आ काई हुय जासी कामणी रे। आफई जासी हार, आ कांई करसी म्हांरो भामणी ए ॥ जि० ॥ ३ ॥ आय वणी छै मोय, तो कायर हुवो किम छुटियै रे। हुणहार तिम होय, मो ने अडिग ने किम लूंटियै रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ परत्यक्ष काम ने भोग, मो ने लागै छै वमीये आहार सारषा जो। हूं किम करूं भोग संयोग, मो ने मुक्ति सुखां री आई पारखा रे ॥ जि० ॥ ५ ॥

ढाल १८ मो।

(ओभव रतन चिन्तामण सरीषो—एदेशो)

रीस चढ़ी बोलै छै राणी, सुणज्यो सेठ हमारी बातो जी। कह्यो हमारो थे मानी लीज्यो, जो चाहो कुशलातो जी॥ रीस चढ़ी बोलै छै राणी॥ १॥ आशा अलुधी हूं किम रहस्यूं, मैं तुझ ने अठै अणायो जी। आशा वंछा पूरो हमरी, करूं थांरो तोल सवायोजी॥ री०॥ २॥ ए वचन सुणी ने सेठ न बोल्यो, जद राणी बोलै विकरालो जी। तूं कह्यो न मानै सेठ हमारो। तो थारो नेड़ो आयो दिसै कालो जी॥ री०॥ ३॥ पुरुप सकोमल हुवै हीयारो, पिण तूं छै कठिन कठोरो जी॥ म्हांरा वचन सुणी ने तूं नहीं पलघलियो, तूं दिसै निपट निठोरो जी॥ री०॥ ४॥ परघलायो भाठो पिण परघलै, पिण तू नहीं परघलायोजी। लोक भलो २ कह छै तुझने, पिण म्हांरै तो मन नही भायो जी॥ री०॥ ५॥ थोड़ी सी समझ आण हीया में, कह्यो हमारो मानो जी॥ नही तो करस्यूं खरावी थांहरी, करदेस्यूं जावक हैरानो जी॥ री०॥ ६॥ हूं भला २ वचन कहूं छूं थाने, तूं नही मानै

निसासा मूकती जी, लीधी धाय बुलाय॥ मात जी कीजै कवण विचार॥ १॥ सेठ नपुसक निसरयो जी, तिण स्यूं सरियो नहीं कोई काज। लहणैं स्यूं देणो पड़्यो जी, म्हांरी उलटी खोई लाज॥ मा०॥ २॥ म्हांरी लाज शरम दोनूं गई जी, बीगड़ गई सर्व बात। बात जो राजा सांभलै जी, तो तुरत करै म्हांरी घात॥ मा०॥ ३॥ आंख्यां आंसू न्हाखती जी, करै घणो सन्ताप। आ बात थल किम बैठसी जी, म्हांरै कवण उदै हुवा पाप॥ मा० ॥ ४॥ म्हांरी सुध ने बुध दोनूं गई जी, घट्यो पुन्याई नो जोग। सुख मांहें दुख उपनो जी, चले उलटो लागो शोग॥ मा०॥ ५॥ राणी धाय ने विनवै जी, कही सेठ तणी सर्व बात। हिवै सेठ ने बारै काटियो जी, हुवै सरव कुशलात॥ मा०॥ ६॥ वचन सुणी राणी तणा जी, बोली पण्डिता धाय। मैं तो ने सीख दीधी घणी जी, पिण थे नहीं मानी बाय॥ बाई जी कीजै एक विचार॥ ७॥ हिवै रात गई दिन उगियो जी, जाग्यो नगर नो जी लोक। सेठ ने बारै लेजाणको जी, नहीं उपारू जोग॥ बा०॥ ८॥ ज्यूं शोभा रहै आपणी जी, कोई

॥ दोहा ॥

वात सुणी राय कोपियो, तीन लीटी ललाट चढ़ाय।
सेठ सुदरशण ने मारण तणो, हुकम कियो छै राय ॥१॥

प्रसिद्ध सूली देवो एहने, नर नारी देखै तिण ठाम।
तो राय अन्तेवर तेह में, कोई न करै एहवो काम ॥ २ ॥

राजा नफर विदा करया, ते गया सेठ ने पास।
अङ्ग उपांग मरोड़ने, गाढ़ो वांध्यो सेठ ने तास ॥ ३ ॥

वात सुणी छै सेठ नी, सारा नगर मझार।
इचरज मोटो उपनो, हुवै घणो हाहाकार ॥ ४ ॥

नगर लोक भेला हुवा, ते करै मांहों मांहीं वात।
राय सेठ स्यूं कोपियो, ते करसी सेठ नी घात ॥ ५ ॥

मांहों मांहिं वातां करै, सहु कोई करै विचार।
सेठ महा गुणवान छै, शील न खण्डै लिगार ॥ ६ ॥

पूर्व कर्म संच्या इण सेठना, उदै हुवा छै आय।
ते वेरो नहीं आपां भणी, जाणै श्री जिनराय ॥ ७ ॥

आपां मिली सहु एकठा, गाढ़ी मन में धार।
राय समीपे जाय ने, परसिद्ध करां पुकार ॥ ८ ॥

जिन धर्म में छै धीर हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ६ ॥ देशाँ परदेशाँ में दीपतो, सौभागी सतवन्त हो । रा० । जात कुले कर निरमलो, वड़ भागी पुन्यवन्त हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ७ ॥ परवार करी पूरो घणो, भली भायां नी जोड़ हो । रा० । दातारां शिर सेहरो, शीलवन्ता शिर मोड़ हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ८ ॥ पूरव कर्म संच्या इण सेठ रे, उदै हुवा छै आय हो । रा० । ते खबर नहीं आपाँ भणी, जाणै श्री जिनराय हो ॥ रा० ॥ अ० ॥६॥ नगर तणा लोकाँ मिली, करथा सेठ तणा गुण ग्राम हो । रा० । जो इण में अवगुण हुवै, तेहना लोक जामान हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ १० ॥ आप छो मोटा राजवी, मोटा छो शूरवीर हो । रा० । परजा सारी विनवै, माफ करो तकसीर हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ११ ॥ सेठ सरिषो थाँरा राज्य में, हुवो न होसी कोय हो । रा० । मारथाँ पछै पिछतावस्यो, थे कहस्यो कह्यो नहीं कोय हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ १२ ॥ चन्द सरिषो सेठ निरमलो, नगर तणो शिणगार हो । रा० । वार वार परजा विनवै, ए अरज करो अङ्गीकार हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ १३ ॥

जिन धर्म में छै धीर हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ६ ॥ देशाँ परदेशाँ में दीपतो, सौभागी सतवन्त हो। रा०। जात कुले कर निरमलो, बड़ भागी पुन्यवन्त हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ७ ॥ परवार करी पूरो घणो, भली भायां नी जोड़ हो। रा०। दातारॉ शिर सेहरो, शीलवन्ता शिर मोड़ हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ८ ॥ पूरव कर्म संच्या इण सेठ रे, उदै हुवा छै आय हो। रा०। ते खबर नहीं आपाँ भणी, जाणै श्री जिनराय हो ॥ रा० ॥ अ० ॥९॥ नगर तणा लोकाँ मिली, करथा सेठ तणा गुण ग्राम हो। रा०। जो इण में अवगुण हुवै, तेहना लोक जामान हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ १० ॥ आप छो मोटा राजवी, मोटा छो शूरवीर हो। रा०। परजा सारी विनवै, माफ करो तकसीर हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ११ ॥ सेठ सरिपो थाँरा राज्य में, हुवो न होसी कोय हो। रा०। मारयाँ पछै पिछतावस्यो, थे कहस्यो कह्यो नहीं कोय हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ १२ ॥ चन्द सरिपो सेठ निरमलो, नगर तणो शिणगार हो। रा०। वार वार परजा विनवै, ए अरज करो अङ्गीकार हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ १३ ॥
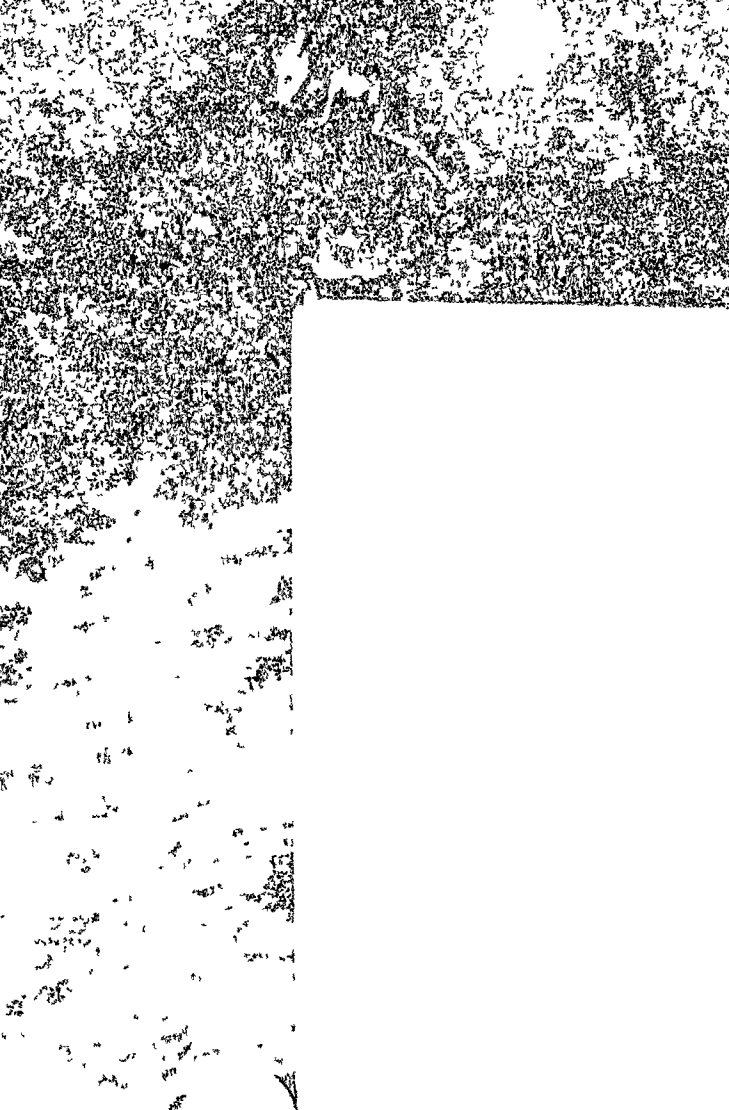
जिन धर्म में छै धीर हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ६ ॥ देशाँ परदेशाँ में दीपतो, सौभागी सतवन्त हो । रा० । जात कुले कर निरमलो, वड़ भागी पुन्यवन्त हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ७ ॥ परवार करी पूरो घणो, भली भायां नी जोड़ हो । रा० । दातारॉं शिर सेहरो, शीलवन्ता शिर मोड़ हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ८ ॥ पूरव कर्म संच्या इण सेठ रे, उदै हुवा छै आय हो । रा० । ते खवर नहीं आपाँ भणी, जाणै श्री जिनराय हो ॥ रा० ॥ अ० ॥६॥ नगर तणा लोकाँ मिली, करथा सेठ तणा गुण ग्राम हो । रा० । जो इण में अवगुण हुवै, तेहना लोक जामान हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ १० ॥ आप छो मोटा राजवी, मोटा छो शूरवीर हो । रा० । परजा सारी विनवै, माफ करो तकसीर हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ ११ ॥ सेठ सरिषो थाँरा राज्य में, हुवो न होसी कोय हो । रा० । मारयाँ पछै पिछतावस्यो, थे कहस्यो कह्यो नहीं कोय हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ १२ ॥ चन्द सरिषो सेठ निरमलो, नगर तणो शिणगार हो । रा० । वार वार परजा विनवै, ए अरज करो अङ्गीकार हो ॥ रा० ॥ अ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

परजा तणी सुण विनती, अधिक कियो मन रोस।
देखो परजा इम कहै, सेठ में नहीं छे दोस ॥ १ ॥
कहो आ बात किम मानिये, प्रतक्ष पकड्यो चोर।
परजा छै अति बावली, करै अणहुंतो शोर ॥ २ ॥
राजा ते परजा देखतां, बोल्यो अतही रूठ।
सेठ ओ चोर साक्षात छै, थे कांई बोलो झूठ ॥ ३ ॥
साचा ने झूठा करै, आ कठै की रीत।
थे जावो घर आपणै, नहीं तो होस्यो फजीत ॥ ४ ॥
नगर लोक पाछा फिरया, नहीं सरी गरज लिगार।
प्रजा तणो सारो नहीं, चाल्या मुंढो विगाड़ ॥ ५ ॥
गाढ़ो बंधन बांध्यो सेठ ने, पकड्या माथा ना केश।
राज पंथ ले चालिया, राय तणै उपदेश ॥ ६ ॥
नगर में दुख हुवो घणो, बले हुवो घणो सन्ताप।
सेठ तणो दुख देख ने, परजा करै बिलाप ॥ ७ ॥

॥ ढाल २१ मी ॥

वीतोड़ी राजानी ॥ पदेशी ॥

सेठ महा दुखी हुवो करुरो रे, नगर तणी प्रजा रही

झूरो रे। हा हा रे राय तैं ए स्यूं कीधो रे, सेठ जी ब्रह्मचारी ने इसो दुख दीधो रे॥ १॥ नगर लोक बोलै एहवी वाणी रे, सेठजी तो छै उत्तम प्राणी रे। विलखा थया नगर तणा नर नारी रे. हाट बाट सूनी थई सारी रे॥ हा०॥ २॥ दोय दिन हुवा छै विना अन्न पाणी रे, गाढ़ो बांध्यो खांच ताणी रे। केश पकड़्या राय पंथ ले चालै रे. ते दुख बहु जणा ने सालै रे॥ हा०॥ ३॥ सेठ ने काढ़ै छै नगर मझारो रे, तिण ने देखी ने रोवै नर नारो रे। वचन कठोर बोलै राज दीवाणो रे, जाणै के लागै छै तीखा बाणो रे॥ हा०॥ ४॥ मार मार करता आया सेठ दुवारो रे. देखने मनोरमा करै पुकारो रे। मनोरमा देख्यो सेठ नो सुलो रे. छिटक पड़ी धरती जीव गई भूलो रे॥ हा०॥ ५॥ करै विलाप ने मसलै हाथो रे, कुण दुख हुवो तीन लोक रा नाथो रे। मनोरमा जाणै सेठ शुद्ध ब्रह्मचारी रे. तिणरे शंका नहीं पड़ी लिगारी रे॥ हा०॥ ६॥ कुण विघन हुवो आज ए कंथो रे. मुझ ने कहो सहु विरतन्तो रे। सेठ कहै सुण मनोरमा नारी रे. पूरव पाप किया मैं अति भारी रे॥ हा०॥ ७॥ पाप कर्म

उदै आया इण वारो रे, भुगत्याँ विना नहीं छुटकारो रे। इण वात रो किण ने नहीं दीजै दोसो रे, वले किण स्यू नहीं करणो रोसो रे ॥ हा० ॥ ८ ॥ तुमे चिन्ता हमारी मत कीज्यो लिगारो रे, म्हांरो नहीं हुवै मूल विगाड़ो रे। शील प्रभावें कुशले घर आऊं रे, जब थानें वितक वात सुणाऊं रे ॥ हा० ॥ ९ ॥ इम सेठ सन्तोपी मनोरमा नारी रे, ते सुण ने सन्तोष पामी मन मझारी रे। इम सेठ ने पिण सन्तोपें मनोरमा नारी रे, थे पिण चिन्ता म करज्यो लिगारी रे ॥ हा० ॥ १० ॥ केवली भाव देख्या तिम हुसी रे, थे पिण राखज्यो घणी खुशी रे। दुख हुवो छै पूरव संचित करमो रे, थे पिण राखज्यो गाढ़ो जिन धर्मो रे ॥ हा० ॥ ११ ॥ इम सीख देई ने मनोरमा नारी रे, राजा न कियो काम विचारी रे। काउसग कियो महलाँ में जाई रे। धर्म ध्यान रही चित्त ध्याई रे ॥ हा० ॥ १२ ॥ सेठजी कुशल खेम घर आवै रे, तो मुझ काउसग आय परावें रे। तो हूँ काउसग पारूं जाणी , नहीं तो जावजीव पचखाणी रे ॥ हा० ॥ १३ ॥

८ कियो मनोरमा नारी रे, एहवो अभिग्रहो मन में

धारी रे। तिहां थकी सेठ ने आघो ले जावै रे, तिण वेला में कुण छुड़ावै रे। नगर तणा लोक देखी तिण कालो रे, नर नारी चढ़ चौवारै निहालो रे॥ हा० ॥ १४॥ उखाणो पड़यो शहर रै माहीं रे, कहै सेठ रा दुख देख्या नहीं जाई रे। महल चढ़ी अभया राणी देखै रे, सेठ रा दुख देखी ने हरषै रे॥ हा० ॥ १५॥ देखै अभया घड़ी दोय च्यारो रे, पछै साच झूठ रो होसी निसतारो रे। ज्यूं हरषै ज्यूं रोवणो पड़सी रे, वले भूंडी कुमीच मरणो पड़सी रे॥ हा० ॥ १६॥ और हरषै त्याने रोवणो पड़सी रे, मस्तक पिण नीचो करसी रे। साच झूठ रो होसी निसतारो रे, जब कोईक करसी मुख कालो रे॥ हा० ॥ १७॥ केइक हुवा प्रफुलित तिण वारो रे, सेठ रा गुण हियै संभालो रे, मार २ करता ले गया मसाणो रे, सेठ उभो कियो सूली पै आणो रे॥ हा० ॥ १८॥

॥ दोहा ॥

राय तणा हुकम तणी, वाट जोवै तिणवार।
राय नफर सुसता थया, कांई ढील करी छै लिगार॥१॥

धारी रे। तिहां थकी सेठ ने आघो ले जावै रे, तिण वेला में कुण छुड़ावै रे। नगर तणा लोक देखी तिण कालो रे, नर नारी चढ़ चौबारै निहालो रे॥ हा०॥ १४॥ उखाणो पड़्यो शहर रै माहीं रे, कहै सेठ रा दुख देख्या नहीं जाई रे। महल चढ़ी अभया राणी देखै रे, सेठ रा दुख देखी ने हरषै रे॥ हा०॥ १५॥ देखै अभया घड़ी दोय च्यारो रे, पछै साच झूठ रो होसी निसतारो रे। ज्यूं हरषै ज्यूं रोवणो पड़सी रे, वले भूंडी कुमीच मरणो पड़सी रे॥ हा०॥ १६॥ और हरषै त्याने रोवणो पड़सी रे, मस्तक पिण नीचो करसी रे। साच झूठ रो होसी निसतारो रे, जब कोईक करसी मुख कालो रे॥ हा०॥ १७॥ केइक हुवा प्रफुलित तिण वारो रे, सेठ रा गुण हियै संभालो रे, मार २ करता ले गया मसाणो रे, सेठ उभो कियो सूली पै आणो रे॥ हा०॥ १८॥

॥ दोहा ॥

राय तणा हुकम तणी, वाट जोवै तिणवार।
राय नफर सुसता थया, कांई ढील करी छै लिगार॥१॥

तिण काले ने तिण समै, सेठ चिन्तवै एम।
म्हांरे अशुभ कर्म उदै हुवा, हिवे काची आदरूं केम ॥२॥
सुख दुख इण संसार में, सहु काहू कु होय।
ज्ञानी भुगतै ज्ञान स्यूं, मूरख भुगतै रोय ॥ ३ ॥

ढाल २२ मी।

(देशी—साधुजी नगरी आया सदा भला जी)

सेठ सुदर्शण करै विचारणाजी, उभो शूली हेठ। कर्म तणी गत दिसै वांकड़ी जी, भोगवणी मुझ नेठ ॥से०॥१॥ किहां अभया राणी राजा तणी जी। किहाँ हूं सुदरशण सेठ, किहाँ हूं मसाण भूमिका माहें रह्यो जी। किहाँ हूं आय उभो शूली हेठ ॥ से० ॥ २ ॥ चम्पा नगरी मांहें हूं मोटको जी, ते हूं सुदरशण सेठ। म्हांरे अशुभ कर्म उदै हुआ जी, तिण स्यूं आय उभो शूली हेठ ॥ से० ॥ ३ ॥ कर्मा स्यूं वलियो जग में को नहीं जी, विन भुगत्याँ मुक्ति न जाय। जे जे कर्म वांध्या इण जीवड़ै जी, ते अवश्य उदै हुआ आय ॥ से० ॥ ४ ॥ जे मैं कर्म वांध्या भव पाछलै जी, ते उदै हुआ आय। पिण याद न आवै कर्म किया तिके जी, निज औगुण रह्यो छै संभाल ॥ से० ॥

५ ॥ के मैं चाड़ी खाधी चौंतरै जी, के मैं दिया अणहुंता आल। ते आल अणहुंतो आयो शिर मांहरै जी, एहवो ज्ञान नहीं मो मांय ॥ से० ॥ ६ ॥ के मैं दो पद चौपद छेदिया जी. के मैं छेदी वनराय। के मैं भात पाणी रांधन किया जी, के मैं दीधी अन्तराय ॥ से० ॥ ७ ॥ के मैं साध सती संतावियाजी, के मैं दीधो कुपातर दान। के मैं शील भांज्या निज पारका जी, के मैं साधां रो कियो अपमान ॥ से० ॥ ८ ॥ तीर्थंकर चक्रव्रत महावली जी, वासुदेव वलदेव। त्यांरै पिण अशुभ कर्म उदै हुवाँ जी, जद भुगत लेवै स्वमेव ॥ से० ॥ ६ ॥ मोटी २ सतियों थी तेह में जी. विखो पड़्यो छै आय। वड़ा २ ऋपेश्वर त्यां भणी जी, कष्ट पड़्यो त्यांरै मांय ॥ से० ॥ १० ॥ त्यां सम मन परिणामा परीसा सह्या जी, ते पहुंता मुक्ति मझार। एहवा साधु सती हुआ त्यां भणी जी, सेठ याद किया तिणवार ॥ से० ॥ ११ ॥ जेहने जेहवा कर्म संचियाजी, ते उदै हुवा छै आय। तिण वाया छै वीज वंबुलना जी. ते आम किहाँ थी खाय ॥ से० ॥ १२ ॥ तो हूं कर्म भुगतूं छूं माँहरा जी, ते मैं वांध्या

छै स्वमेव। हिवे आमण दुमण किम होऊंजी, तो हिवे करणो किसो अहमेव ॥ से० ॥ १३ ॥

दोहा।

घोर परीसा खमी करी, पोंहता मुक्ति मझार।
सेठ सुदरशण तिण समें, याद किया अणगार ॥ १ ॥

परणाम दृढ़ किया आपणा, सेठ महा वड़ वीर।
भय रहित निरभय थको, उभो शूली तीर ॥ २ ॥

वले सेवक राजा मेलिया, आया वीजी वार।
शूली दीज्यो सेठ ने, मत करो ढील लिगार ॥ ३ ॥

तिण काले ने तिण समें, शील सहाई देव।
आप आप तणै ठाम में, सुख भोगवै नितमेव ॥ ४ ॥

आसण चलियो तेहनो, अङ्ग फरूक्यो तिणवार।
अवधि प्रयुंजी तिण समें, सेठ ने देख्यो तिणवार ॥ ५ ॥

गाढ़ै वंधण वांधियो, कष्ट पड्यो तिणवार।
आया शील सहाई देवता, करण सेठ नी सार ॥ ६ ॥

ढाल २३ मी।

(देशी—डाभ मूंजादिक नी डोरी)

देवतां कियो शिणगार, पहरया आभूपण सार। मोल मुंहगा ने हलका तोल, एहवा वस्त्र पहर्या अमोल ॥१॥ काने कुण्डल सोहै विशाल, सिर मुकट सोहै रसाल। हीयै हार विराजै अति नीको, शोभै भाल रतना तणो टीको ॥ २ ॥ ते आभूपण अतही भलकै, जाणं आभै बीजलियाँ चमकै। ते आभूपण रिम झिम वाजै, जाणै आकाशे अंवर गाजै ॥ ३ ॥ मिलने आवै देवता सारा, जाणै तूटा आवै अंवर स्यूं तारा। जिहाँ आवै देवताँ रा वृन्दो, त्यांरी चिहुं दिशि फूटी सुगन्धो ॥ ४ ॥ आकाशे देव दुन्दुभि वाजे, जाणै आकाशे अंवर गाजै। देव निरघोप शब्द करन्ता, आया देव सहु हरपन्ता ॥ ५ ॥ आय उभा सेठ रे पास, हाथ जोड़ी करै अरदास। घणो सनमान दीधो ताम, करै सेठ तणा गुण ग्राम ॥ ६ ॥ धन २ रे तूं ब्रह्मचारी, तैं शील पाल्यो एकधारी। अभया राणी आगै रह्यो सैंठो, अडिग पणै मैं रह्यो सैंठो ॥ ७ ॥ उण चाला चरित्र किया अनेक, थारो रूम न चलियो एक। उण

मारी पाड़्या, तिण ठाम थी दूर न्हसाड़्या ॥ १६ ॥ एक नफर न्हासी तिणवारो, आय राजा ने करी पुकारो। सेठ री मांड कही सर्व वातो, इण में कूड़ नहीं तिलमातो ॥ १७ ॥ ए वात सुण ने राय रीसायो, परमारथ पूरो नहीं पायो। तिण स्यूं राय सेवग ने वुलायो, सेन्याँ ने सझ करो जायो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

चतुरंगणी सेन्याँ सझ करी, पाछी आगन्या सूंपी आय।
ए वचन सुणी राय सेवग तणो, हस्ती खांधै वैठो राय ॥

॥ ढाल २४ मी ॥

(देशी—नथ गई रे म्हारी नथ गई)

तुरत चढ्यो रे राय तुरत चढ्यो, तुरत चढ्यो न लगाई वार। चतुरंगणी सेन्यां लेई लार। राय तुरत चढ्यो ॥ १ ॥ साथे चढ्या राय ने वहु शूर, आगल वजावै रण तूर ॥ रा० ॥ २ ॥ दे धूंसो चाल्यो राजान, मन मे धरतो अति अभिमान ॥ रा० ॥ ३ ॥ आगै करी हाथ्यां

मेह ॥ २ ॥ सेठ तणा दल ऊपर, राजा तणा छुटै बाण। को को शब्द करंता, पड़ै बिजली जिम आण ॥ ३ ॥ शूरा सुभट राजा रा, ते हुवा साहस धीर। संग्राम में रूठा, कांनि २ लागा बड़वीर ॥ ४ ॥ जब देवता देख्यो, राय तणो संग्राम। जब देवता जाण्यो, ओ राय लड़ै वे काम ॥ ५ ॥ सुदरशण सेठ री, म्हें करवा आया सहाय। सेठ शीलवंत मोटो, ते नहीं जाणै राय ॥ ६ ॥ राय नी राणी अभया, सेठ शिर दीधो आल। तिण स्यूं म्हे आया, सेठ नी करण रुखवाल ॥ ७ ॥ तो कांईक राजा ने, देखालाँ चमत्कार। तो हिव राजा ने, त्रास पमाडां इणवार ॥८॥ हिवै देवता मिल ने, विद्या पढ़ी एक आम। तिण स्यूं राय नी सेन्या, मुरछित हुई तिण ठाम ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सेन्यां सर्व न्हासी गई, एक राय उभो स्वमेव।
ते पिण डरतो न्हासी गयो, तिण रे लारै हुवा छै देव ॥१॥
जब देव कहै राजा प्रते, तूं जासी कितीएक दूर।
स्वर्ग नरक छोड़ा नहीं, तो नैं मार करां चकचूर ॥ २ ॥

मेह ॥ २ ॥ सेठ तणा दल ऊपर, राजा तणा छूटै बाण । को को शब्द करंता, पड़ै विजली जिम आण ॥ ३ ॥ शूरा सुभट राजा रा, ते हुवा साहस धीर । संग्राम में रूठा, कांनि २ लागा वड़वीर ॥ ४ ॥ जब देवता देख्यो, राय तणो संग्राम । जब देवता जाण्यो, ओ राय लड़ै ने काम ॥ ५ ॥ सुदरशण सेठ री, म्हें करवा आया सहाय । सेठ शीलवंत मोटो, ते नहीं जाणै राय ॥ ६ ॥ राय नी राणी अभया, सेठ शिर दीधो आल । तिण स्यूं म्हे आया, सेठ नी करण रुखवाल ॥ ७ ॥ तो कांईक राजा ने, देखालाँ चमत्कार । तो हिव राजा ने, त्रास पमाड़ां इणवार ॥८॥ हिवै देवता मिल ने, विद्या पढ़ी एक आन । तिण स्यूं राय नी सेन्या, मुरछित हुई तिण ठाम ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सेन्यां सर्व न्हासी गई, एक राय ऊभो स्वमेव ।
ते पिण डरतो न्हासी गयो, तिण रे लारै हुवा छै देव ॥१॥
जब देव कहै राजा प्रते, तूं जासी किर्ताएक दूर ।
स्वर्ग नरक छोड़ा नहीं, तो नै मार करां चकचूर ॥ २ ॥

४ ॥ राजलोक सारो आय कुकियो. त्यांरी वात मैं लीधी मान । सु० । मैं निकाल न काढ्यो इण वात रो. तिण स्यूं हुवो छूं हैरान ॥ सु० ॥ से० ॥ ५ ॥ मैं विना विचारयो आपने, दीधो छै मोटो आल । सु० । शूली देणो आपने मांडियो, विण काढ्यां निकाल ॥ सु० ॥ से० ॥ ६ ॥ मो ने नगरी ना लोकां कह्यो घणो, सेठ में दोष नही तिलमात । सु० । तिण स्यूं क्रोध चड्यो छो आकरो, मैं किण री न मानी वात ॥ सु० ॥ से० ॥ ७ ॥ इण चम्पा नगरी में तुम तणें, शील तणी सारां ने परतीत । सु० । पिण नाहक थको मैं आपने. कीधी घणी कुप्रीत ॥ सु० ॥ से० ॥ ८ ॥ मैं अपराध कियो घणो आपरो. उपजाई असाता पीड़ । सु० । ते खमज्यो अपराध सर्व मांहरो. माफ करो तकसीर ॥ सु० ॥ से० ॥ ९ ॥ आप ब्रह्मचारयां शिर मोड़ छो, चलाया चलो नहीं शूर । सु० । पिण अभया राणी अति पापणी. तिण आल दीधो छै कूड़ ॥ सु० ॥ से० ॥ १० ॥ हिवै कृपा करो मो ऊपरें. ज्यूं रहै हमारी शर्म ने लाज । सु० । हूं शरणें आयो छूं तुम तणें. जीवां बचूं हूं आज ॥ सु० ॥ से० ॥ ११ ॥ आज जीवां बचूं देवता कनें. ते

आप तणो उपगार । मु० । आप शर्ण आयां ने राखस्यों,
ए गुण कदेय न घालूं विसार ॥ मु० ॥ मं० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

ए वचन सुणी राजा तणा, सेठ बोल्यो तिणवार ।
आप शिर धणी छो मांहरा, मत करो फिकर लिगार ॥१॥

मो आगे उभा देवता, ते नहीं करे आप री घात ।
आप चिन्ता मूल करो मती, डरो मती तिलमात ॥ २ ॥

ए सेठ रा वचन राजा सुण्या, आयो मन विश्वास ।
ओ सेठ मरावण में नहीं, तो रहूं सेठ रे पास ॥ ३ ॥

शरणो पड़िवज्यो सेठ रो, राय बैठो तिण ठाम ।
करड़ा वचन कहै देवता, घणी रीस करी ने ताम ॥ ४ ॥

ढाल २७ मी ।

(देशी—चन्द्रगुप्त राजा तणी)

रूठा शील सहाई देवता, हुवा छै धग धगाय मानो
रे । करड़ा वचन मुख उचरै, सुण धात्री वाहन राजानो

रे। रूठा शील सहाई देवता ॥१॥ अपथपथियो तूं खरो, काली अमावस रो जायो रे। लज्या लछमी बाहिरो, भूंडा लक्षण तो मायों रे ॥ रू० ॥ २ ॥ अकाले मरण बंछै नहीं, तिण रो तूं बंछण हारो रे। सुध बुध बिगड़ी थांहरी, पुन्य गया परवारो रे ॥ रू० ॥ ३ ॥ ओ सेठ सुदरशण मोटको, शील करी शुद्ध ब्रह्मचारी रे। तिण ने दुख दीधो किण कारणै, शूली देवा ने कियो तयारी रे ॥ रू० ॥ ४ ॥ हिवै औगुण बताय तूं सेठ में, का म्हे करस्यां थारी घातो रे। थे सेठ ने थाप्यो कुशीलियो, मान राणी री बातो रे ॥ रू० ॥ ५ ॥ तैं सेठ ने दुख दीधा घणा, निज नारी नो नही लियो मरमो रे। शूली दैणो मांड्यो सेठ ने, इसड़ो थे कीधो करमो रे ॥ रू० ॥ ६ ॥ किण रो पुत्र होय कुशीलियो, तिण स्यूं उलटी डरै मायो रे। जब सीख देवै तेहने, जब लड़ै सत्यां स्यूं जायो रे ॥ रू० ॥ ७ ॥ ज्यूं तूं न्यायी ने अन्यायी करै, अन्यायी ने करै न्यायी रे। अभया चरित्र किया जिका, राजा ने दिया सुणाई रे ॥ रू० ॥ ८ ॥ राय सेठ समीपे बैठां थकां, सुणी अभया राणी री बातो रे। स्नेह भागो

॥ रू० ॥ १६ ॥ राय तणी सेन्यां तिहां, जावक पड़ी छै अचेतो रे। सेठ रैं कह्यां थी देवता, राय नी सेन्यां कीधी सचेतो रे ॥ रू० ॥ १७ ॥ फूलां तणी वर्षा करी देवता, शील री महिमा वधारी रे। घणा गुण किया सेठ रा, ओ सेठ वड़ो ब्रह्मचारी रे ॥ रू० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

घणी महिमा वधारी देवता, वले किया घणा गुण ग्राम।
नर नारी सहु हरषित हुवा, गुण ग्राम करैं ठाम ठाम ॥१॥
घणा गहणा आभूषण आपिया, आभरण विविध प्रकार।
सेठ सुदरशण तेहने, देवता दिया तिणवार ॥ २ ॥
वले किया महोछव सेठ रा, यश किरत करैं छै ताय।
देवां मिलि ने तिहां किया, आया जिण दिश जाय ॥३॥
वले सेठ सुदरशण तेहना, करैं महोछव राय।
महिमा वधारैं सेठ री, ते सुणज्यो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल २८ मी।

(देशी—तीजी वाड हिवै चित्त चिवारो)

हिवै सेवग पुरुष बोलाय ने, कहैं धात्री वाहन राय

हुकम सर्व आपरो, थांरी कोइय न लोपै कार हो लाल ॥ रा० ॥ ८ ॥ हूं आज्ञाकारी आपरो, राज चलावो रूड़ी रीत हो लाल। थे देस्यो ते हूं खाय स्यूं, मो ने आप तणी परतीत हो लाल ॥ रा० ॥ ६ ॥ हाल हुकम सर्व आपरो, राज तणा धणी छो आप हो लाल। मन मान्यो कीज्यो सर्व आपरो, आप तणी थाप उथाप हो लाल ॥ रा० ॥ १० ॥ हिवै सेठ सुदरशण कहै राय ने, आप छो म्हांरै पिता समान हो लाल। आप विन इतनी कुण करै, एक वात सुणो म्हांरी कान हो लाल ॥ रा० ॥ ११ ॥ मैं अभिग्रहो लीधो एहवो, राणी उपसर्ग दियो तिणवार हो लाल। जो इण उपसर्ग थी कुशले रहूं, तो लेऊं संजम भार हो लाल ॥ रा० ॥ १२ ॥ आप कृपा कर द्यो आगन्या, मैं जाण्यो अथिर संसार हो लाल। कुटम्ब कविलो छोड़ने, कर देऊं खेवो पार हो लाल ॥ रा० ॥ १३ ॥ अभया राणी ने धाय पण्डिता, त्यांरै कह्यां मैं कियो अकाज हो लाल। ते खमज्यो अपराध सर्व मांहरो, वारम्वार खमाऊं छूं आज हो लाल ॥ रा० ॥ १४ ॥ अभया राणी ने धाय पण्डिता, थाने आल दीधो छै कूड़

जब राय कहै छै सेठ ने, थे मिलो कुटम्ब स्यूं जाय।
मनोरमा स्त्री तणा, पूरो मनोरथ ताय ॥ २ ॥

जब घर जाता सेठ ने, सेन्या करी तैयार।
पट हस्ती पर सेठ ने, वैसाण्यो तिणवार ॥ ३ ॥

पूठै राजा वैठ ने, चमर लियो तिणवार।
सेठ ऊपर चामर करै, रूड़ी रीत तिवार ॥ ४ ॥

॥ ढाल २६ मी ॥

(देशी—डाभ मूंजादिक नी डोरी)

हस्ती चढ़ चाल्यो नर नाथ, सेठ सुदरशण रै साथ। लारै सुभट चल्या घणा शूर, आगै वाजा वाजै रण तूर ॥ १ ॥ आगै हाथ्यां री हलकार, चतुरङ्गणी सेन्यां छै लार। आगै चालै नेजा निसाण, इत्यादिक करी मोटै मंडाण ॥ २ ॥ ते पिण चम्पा नगरी में आवन्त, सेठ तणा गुण गावन्त। ए तो नगर नी पोल आय उभा, सहु लोक हुवा अचम्भा ॥ ३ ॥ सेठ ने करै सहु प्रणाम, मुख स्यूं करै छै गुण ग्राम। ओ तो सेठ चड़ो ब्रह्मचारी

सेठ मूकी निज अभिमान, सारां ने दीधो आदर सनमान । चम्पा नगरी ने मझ बजार, धीरै २ चाल्या तिणवार ॥ १३ ॥ बाजा बाज रह्या घन घोर, मुख स्यू करै छै लोक शोर । ऊंचा चढ़्या लोक अनेक, नर नारी हरसै सेठ ने देख ॥ १४ ॥ तिण अवसर चम्पा नगर मझार, कल २ शब्द हुवो तिणवार । एहवो शब्द सुणी राणी तास, ऊंची चढी महल आवास ॥ १५ ॥ सेठ ने देख्यो हाथी मझार, राजा ने बैठो देख्यो लार । राणी दासी ने पूछै एकन्त, ए नगर में कुण विरतन्त ॥ १६ ॥ दासी मांड कही सर्व बात, शङ्का नहीं एह में तिलमात । राणी हुई सोगी सन्तापी, ओ तो बचियो दिसै सेठ पापी ॥ १७ ॥ धड़ धड धृजे तिण ठाम, ओ तो बिगड्यो दिसै म्हांरो काम । जब कहै धाय ने बुलाय, हिवै कीजे कोण उपाय ॥ १८ ॥ राणी ना वचन सुण्या धाय, पाछी बोली धाय रीसाय । बाई म्हांरो नही कोई सारो, हिवै आछी लागै सो विचारो ॥ १९ ॥ इम कर नीरस भागी धायो, राणी ऊभी महलां रै मांयो । आज गई पाखण्डण सायो, वेश्या रै दासी रही जायो ॥ २० ॥ हिवै [illegible] करै [illegible]
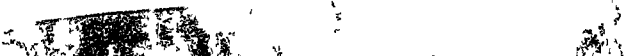
त्यांरी हर्ष स्यूं आख्यां भराणी, नयणा मांह स्यूं काढ़ै पाणी। त्यां सगला ने सेठ देखी तायो, मनोरमा नहीं त्यां मांयो ॥ २९ ॥ नहीं दिठी मनोरमा नार, जब सेठ पूछै तिणवार। मनोरमा थां में छै के नाहीं, तिणरो विरतन्त छै कोई ॥ ३० ॥ जब वे कहै सेठ रे पासो, वे तो ऊंचा चढ्या आवासो। त्यां तो काउसग दीनो ठाय, धर्म ध्यान रही छै ध्याय ॥ ३१ ॥ म्हे तो कह्यो घणो जाय। कुशले आयां री दीधी वधाय। त्यां पिण काउसग नहीं पारयो, न जाणूं कोई अभिग्रह धारयो ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

सेठ सुदरशण ने घरे, वैठो धात्री वाहन राजिन्द।
वाजित्र अनेक विध वाजता, मिलिया नर नारयां ना वृन्द ॥
सेठ कुशल खेम घर आवियो, न्याती गोती तिणवार।
सहु कोई हरषित हुवा, वरत्या जय जय कार ॥ २ ॥
वेटा वहु आद मिल्या सहु, हर्षित हुवा नैण निहाल।
एक न दीठी मनोरमा, तिण अभिग्रह लियो तिणवार ॥३॥

लागती ए. मैं इसड़ो कियो अकाज ॥ रा० ॥ ३ ॥ मनोरमा स्त्री सेठ री ए, ते पिण मरती इण रीत। ते हित्या मो ने लागती ए. मैं इसड़ी करि विपरीत ॥ रा० ॥ ४ ॥ मैं अभया राणी रे कह्यां थकी ए, मोटो कियो अकाज। दुःख दीनो दोयाँ भणी ए. म्हांरी गई लोकाँ में लाज ॥ रा० ॥ ५ ॥ सती छै स्त्री सेठ री ए, गुणा तणी भण्डार। अभया राणी मांहरी ए. कुशीलणी कुपातर नार ॥ रा० ॥ ६ ॥ जैसोई सेठ जैसी स्त्री ए. जोड़ी मिली छै आण। मो ने तो अभया मिली ए. पाप तणै परमाण ॥ रा० ॥ ७ ॥ उत्तम नर नारी बेहु जणा ए, त्यांरो फैल्यो जश सौभाग। ते पिण वसै म्हांरा नगर में ए. मांहरे छै मस्तक भाग ॥ रा० ॥ ८ ॥ घणा गहणा आभूषण आपिया ए. वस्त्र अनेक विध आप। सारां सेठाँ सिरै ए. सुदरशण ने पदवी थाप ॥ रा० ॥ ६ ॥ भारी भारी भेटणा मोटका ए, हीरा माणक मोती नार। राजा ने सेठ आपिया ए. सेठ पगाँ लागो तिणवार ॥ रा० ॥ १० ॥ राय करै महोछव सेठ रा ए. पाछी सीख मांगी राय। जब सेठ कीनी विनती ए. राय हरष्यो मन मांय

ढाल ३२ मी।

(देशी—आज आणन्द मन उपनो सुण प्राणी रे)

मन रो मनोरथ पूरो थयो। सुण प्राणी रे। मन-चिन्त्या सरिया काज। आज सुण प्राणी रे। जग में जश फैल्यो घणो। सु०। म्हांरी रही शील स्यूं लाज॥ आ०॥ १॥ सञ्जम पाखै तू जीवड़ा। सु०। पामै नहीं भव पार। आ०। जनम मरण करतो थको। सु०। भमियो इण संसार॥ आ०॥ २॥ कबुएक नरक निगोद में। सु०। कबुएक तिर्यंच मझार। आ०। कबुएक सुर नर देवता। सु०। इण रीतै भमियो संसार॥ आ०॥३॥ कबुएक इष्ट सञ्जोगियो। सु०। कबुएक इष्ट वियोग। आ०। कबुएक भोग ने भोगव्या। सु०। कबुएक अति घणो सोग॥ आ०॥ ४॥ इण रीते भमतो थको। सु०। मिट्यो नहीं भ्रम जाल। आ०। अबै अपूरब पामियो। सु०। श्री जिन धर्म सम्भाल॥ आ०॥ ५॥ धर्म तणा जतन करो। सु०। अब इनो अवसर पाय। आ०। धर्म विहुणा मानवी। सु०। गया जमारो गमाय॥ आ०॥ ६॥ अब पञ्च महाव्रत आदरूं। सु०। छोड़ी ने

ढाल ३२ मी।

(देशी—आज आणन्द मन उपनो सुण प्राणी रे)

मन रो मनोरथ पूरो थयो। सुण प्राणी रे। मन-चिन्त्या सरिया काज। आज सुण प्राणी रे। जग में जश फैल्यो घणो। सु०। म्हांरी रही शील स्यू लाज॥ आ०॥ १॥ सञ्जम पावै तूं जीवड़ा। सु०। पामै नहीं भव पार। आ०। जनम मरण करतो थको। सु०। भमियो इण संसार॥ आ०॥ २॥ कवुएक नरक निगोद में। सु०। कवुएक तिर्यच मझार। आ०। कवुएक सुर नर देवता। सु०। इण रीतै भमियो संसार॥ आ०॥३॥ कवुएक इष्ट सञ्जोगियो। सु०। कवुएक इष्ट वियोग। आ०। कवुएक भोग ने भोगव्या। सु०। कवुएक अति घणो सोग॥ आ०॥ ४॥ इण रीते भमतो थको। सु०। मिट्यो नहीं भ्रम जाल। आ०। अबै अपूरव पामियो। सु०। श्री जिन धर्म सम्भाल॥ आ०॥ ५॥ धर्म तणा जतन करो। सु०। अब इसो अवसर पाय। आ०। धर्म विहुणा मानवी। सु०। गया जमारो गमाय॥ आ० ॥ ६॥ अब पञ्च महाव्रत आदरूं। सु०। छोड़ी ने

ढाल ३२ मी।

(देशी—आज आणन्द मन उपनो सुण प्राणी रे)

मन रो मनोरथ पूरो थयो। सुण प्राणी रे। मन-चिन्त्या सरिया काज। आज सुण प्राणी रे। जग में जश फैल्यो घणो। सु०। म्हांरी रही शील स्यू लाज॥ आ०॥ १॥ सञ्जम पाखै तू जीवड़ा। सु०। पामै नहीं भव पार। आ०। जनम मरण करतो थको। सु०। भमियो इण संसार॥ आ०॥ २॥ कबुएक नरक निगोद में। सु०। कबुएक तिर्यंच मझार। आ०। कबुएक सुर नर देवता। सु०। इण रीतै भमियो संसार॥ आ०॥३॥ कबुएक इष्ट सञ्जोगियो। सु०। कबुएक इष्ट वियोग। आ०। कबुएक भोग ने भोगव्या। सु०। कबुएक अति घणो सोग॥ आ०॥ ४॥ इण रीते भमतो थको। सु०। मिट्यो नही भ्रम जाल। आ०। अबै अपूरव पामियो। सु०। श्री जिन धर्म सम्भाल॥ आ०॥ ५॥ धर्म तणा जतन करो। सु०। अब इसो अवसर पाय। आ०। धर्म विहुणा मानवी। सु०। गया जमारो गमाय॥ आ०॥ ६॥ अब पञ्च महाव्रत आदरूं। सु०। छोड़ी ने

ने

न

न

सेठ वांदण ने चालियो, साथे लियो घणो परिवार।
साथे लीधी मनोरमा स्त्री, तिण री ऋद्ध रो घणो विस्तार॥

मोटै आडम्बर स्यूं निकल्यो, चम्पा नगर मझार।
सेठ तणी ऋद्ध देखवा, आया घणा नर नार॥ ५॥

इण रीते सेठ सुदरशणो, आयो छै बाग मझार।
पञ्च अभिग्रह मन सांचवी, वांद्या धर्मघोष अणगार॥६॥

सुख साता पूछै साधाँ भणी, बैठो सभा मझार।
धर्म कथा धुन स्यूं कहै, चौनाणी अणगार॥ ७॥

॥ ढाल २३ मी ॥

(देशी—अहो २ भवियण साभलो)

अहो २ भवियण सांभलो, धर्म तणो ए सारज रे। करणी करो कर्म काटवा, ज्यू पामो भव पारज रे। अहो अहो भवियण सांभलो॥ १॥ वैठी सुणे सहु परषदा मुनिवर अमृत वाणज रे। गत पांचूं तिहां वरणवी, तेहनो करै वखाणज रे॥ अ०॥ २॥ प्रथम गति नारकी तणी, अत्यन्त दुखांरी खाणज रे। किण कर्मे ओ जीवड़ो, उपजै

पगाँ उभराणो नागो फिरै, नित प्रत मजूरी जायज रे।
पोट बांध गाँव २ फिरै, पेट न पूरो भरायज रे ॥ अ० ॥
१२ ॥ साधु कदे नहीं वन्दिया, दान देवा ने सूमज रे।
ते भिख्या मांगत घर २ फिरै, भटकै भाट जिम डूमज रे
॥ अ० ॥ १३ ॥ साधु ने वांद्या भल भाव स्यूं, दीधो
अढ़लक दानज रे। ते तो भरतेसर जाणज्यो, ज्यांरो
परसिद्ध लोक में नामज रे ॥ अ० ॥ १४ ॥ साधाँ ने
वांद्यां थकाँ, कटै करमां रा फन्दज रे। नीच गोत्र रो
क्षय करै, ऊंच गोत्र रो बन्धज रे ॥ अ० ॥ १५ ॥ चौथी
गत देवता तणी, भापी श्री मुनिरायज रे। सुख तिहाँ जिन
भोगवै, कुण कर्म उपजै जायज रे ॥ अ० ॥ १६ ॥ वैराग
संजम पालै सदा, उर श्रावग रो धर्मज रे। ते स्वर्ग लोक
में उपजै, बांधी ने शुद्ध कर्मज रे ॥ अ० ॥ १७ ॥ उर
अकाम निरजरा करी, अज्ञान तप करै जाणज रे। ते शील
पालै लज्या करी, ते उपजै वैमाणिकज रे ॥ अ० ॥१८॥
पांचवीं गत सिद्धां तणी, अनन्त सुखाँरी खाणज रे। किण
करणी कर उपजै, सिद्ध गत माहें आणज रे ॥ अ० ॥
१९ ॥ पञ्च महाव्रत आदरै, सहै परीसा वीस दोयज रे।

॥ दोहा ॥

धर्म कथा सुण परषदा, हिवड़ै हरषित थाय।
सगत सारू व्रत आदरी, आया जिण दिशि जाय ॥ १ ॥
सेठ सुदरशण तिण समै, बोल्यो जोड़ी हाथ।
पाछले भव हूं कुण हुंतो, ते किरपा कर कहो स्वामी नाथ ॥
धर्मघोष साधु तिण अवसरे, सेठ सुदरशण ने कहै आम।
पाछल भव कहूं छूं थांहरो, ते सुण राखे चित्त ठाम ॥३॥

ढाल ३४ मी।

(देशी—वीर कहै गोयम सुणो)

विन्ध्याचल पर्वत हुंतो, एक दुष्टी भील हुंतो ताह हो। सुदरशण। ते आरत ध्यान माहें मुवो, स्वान हुवो गोकल मांह हो ॥ सुदरशण ॥ चित्त लगाई ने सांभलो ॥ १ ॥ ते गुजरां तणै पाड़ै वसै, फिरतो गुजरां री साथ हो। सु०। फिरतां २ स्वान एकदा, देख्या साधु सु जात हो ॥ सु० ॥ चि० ॥ २ ॥ साधू देखी ने स्वान का, आया शुभ परिणाम हो। सु०। तिहां बांध्यो आउषो मिनखरो, पुन्य उपजाव्यो तिण ठाम हो ॥ सु० ॥ चि०

साधु जी, तो ने देख्यो तिणवार हो। सु०। जब साधु जाण्यो ओ तो गुवालियो, जिन धर्म न जाणै लिगार हो ॥ सु० ॥ चि० ॥ ११ ॥ जब साधु गुवालिया ने इम कहै, थे अब आरम्भ कियो आज हो। सु०। साधां काजे आरम्भ करणो नहीं, ओ मोटो छै अकाज हो ॥ सु० ॥ चि० ॥ १२ ॥ जब सुलभ बोधी जाण्यो तेहने, साधु दियो उपदेश हो। सु०। जीव न मारे तूं जाणने, नित नवकार जपेस हो ॥ सु० ॥ चि० ॥ १३ ॥ साधु वचन थे मानियो, नित समरयो नवकार हो। सु०। रात दिवस जपवो कियो, न घाल्यो विसार हो ॥ सु० ॥ चि० ॥ १४॥ थे निश्चो राख्यो तिण ऊपरै, थे राख्या शुद्ध परिणाम हो। सु०। बांध्यो आउखो मनुष्य रो, परत संसार कियो तिण ठाम हो ॥ सु० ॥ चि० ॥ १५ ॥ तिहां काल करी ने उपनो, ऋषभदास घरे आण हो। सु०। थारो नाम सुदरशण इहां दियो, चौथो भव तूं जाण हो ॥ सु० ॥ चि० ॥ १६ ॥ कुरङ्गणी नामे भीलड़ी, ते पिण मुंई आरत मांय हो। सु०। राज दुवारे छेली हुई, कर्म तणै वश आय हो ॥ सु० ॥ चि० ॥ १७ ॥ ते अनुक्रमे

जी । तिण समर्‍यो नवकार ने, नदी फाट हुई दोय डालो जी ॥ न० ॥ ५ ॥ श्रीमती बेटी सेठ री, ते सुन्दर रूप सुकमालो जी । तिण समर्‍यो नवकार ने, सर्प थयो पुष्पमालो जी ॥ ६ ॥ राय शूली दियो चोर ने, सेठ सिखायो नवकारो जी । जिण जाप जप्यो नवकार नो, पाम्यो सुर अवतारो जी ॥ न० ॥ ७ ॥ सेठ बेच्यो निज पुत्र ने, सोनईयां बराबर तायो जी । नवकार गुण बैठो होम में, तुरत हुई तिण री सहायो जी ॥ न० ॥ ८ ॥ सेठ डूबतो समुद्र में, तिण समर्‍यो नवकारो जी । तिण री ज्याझ उठाई देवता, मेल दीधी पैलै पारो जी ॥ न० ॥ ९ ॥

दोहा ।

साधु वचन सुण हरषियो, बोल्यो जोड़ी हाथ ।
निज पुत्र ने थापि परिवार में, हूं दीक्षा लेस्यूं स्वामीनाथ ॥

चलता मुनिवर इम कहै, जो धारै लैणो सञ्जम भार ।
घड़ी जावै ते पाछी आवै नहीं, मत करो ढील लिगार ॥

सगपण एह, तिण स्यूं किस्यो रे स्नेह । आ० । ओ मेलो मिल्यो छै सर्व कारमो जी ॥ ६ ॥ ए वासो वसियो आय, ते नहीं नेठाउ थाय । आ० । निश्चो नहीं किण वातरो जी ॥ ७ ॥ काल चटको देय, आंधी गीणै न मेह । आ० । काल आयां उठ जावणो जी ॥ ८ ॥ हूं परदेशी ज्यूं ताम, मोने कोइय नहीं विसराम । आ० । हूं किण भरोसे रहूं घर मझं जी ॥ ९ ॥ में मेल्या लाखां ऊपर कोड़, ते पिण गया उभा छोड । आ० । त्यांने पिण मेल्या मसाण में जी ॥ १० ॥ ऊंचा माल कराया होडा होड, ते पिण गया उभा छोड़ । आ० । परभव जासी प्राणी एकलो जी ॥ ११ ॥ जीव भोगवै निज पुन्य पाप, क्यूं करो तुमे सोग सन्ताप । आ० । जग में कोई केहनो नहीं जी ॥ १२ ॥ मात पिता सुत भाय, कोई काहू को नांय । आ० । एकलो आयो जासी एकलो जी ॥ १३ ॥ इम जाणी करो जिन धर्म, ज्यूं [illegible] कर्म । आ० । धर्म सखाई इण जीवरो जी ॥ १४ ॥ एक [illegible] काज, पामैं अविचल राज । आ० । [illegible] सासता जी ॥ १५ ॥ इत्यादिक [illegible] [illegible]. –

सगपण एह, तिण स्यूं किस्यो रे स्नेह । आ० । ओ मेलो मिल्यो छै सर्व कारमो जी ॥ ६ ॥ ए वासो वसियो आय, ते नहीं नेठाउ थाय । आ० । निश्चो नहीं किण वातरो जी ॥ ७ ॥ काल चटको देय, आंधी गीणै न मेह । आ० । काल आयां उठ जावणो जी ॥ ८ ॥ हूं परदेशी ज्यूं ताम, मोने कोइय नहीं विसराम । आ० । हूं किसै भरोसै रहूं घर मझै जी ॥ ६ ॥ मैं मेल्या लाखां ऊपर कोड़, ते पिण गया उभा छोड़ । आ० । त्यांने पिण मेल्या मसाण में जी ॥ १० ॥ ऊंचा महल कराया होडा होड, ते पिण गया उभा छोड़ । आ० । परभव जासी प्राणी एकलो जी ॥ ११ ॥ जीव भोगवै निज पुन्य पाप, क्यूं करो तुमे सोग सन्ताप । आ० । जग में कोई केहनो नहीं जी ॥ १२ ॥ मात पिता सुत भाय, कोई काहु को नोय । आ० । एकलो आयो जासी एकलो जी ॥ १३ ॥ इम जाणी करो जिन धर्म, ज्यूं रहै सहु नी शर्म । आ० । धर्म सखाई इण जीवरो जी ॥ १४ ॥ धर्म स्यूं सीझै आत्म काज, पामै अविचल राज । आ० । शिव सुख पामै जीव सास्वता जी ॥ १५ ॥ इत्यादिक दियो उपदेश,

धात्री वाहन तिण अवसरै, सेठ नो निखमण जाण।
हिवै करै महोछव दीक्षा तणा, कर मोटै मंडाण ॥ ४ ॥

वाजींत्र विविध प्रकार ना, आवाज करै गुञ्जार।
ते लागै कानां ने सुहामणा, मन में हर्ष अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३७ मी ॥

(देशी—आछेलाल)

आगै कर नेजा निसाण, ध्वजा पताका जाण। आछेलाल। महेन्द्र ध्वजा घणी रलियामणी जी ॥ १ ॥ हाथी घोड़ा ने रथ शिणगार, पायक विविध प्रकार। आ०। चौरङ्गणी सेन्याँ ले निसरयो जी ॥ २ ॥ राजा चाल्यो आगीवाण, कर मोटै मंडाण। आ०। अनेक सुभटाँ स्यूं राजा परवरयो जी ॥ ३ ॥ करै घणा हगाम, सेठ तणा गुण ग्राम। आ०। जय जय शब्द मुख उचरै जी ॥४॥ मॉचा ऊपर मॉचा मण्ड, घणा नर नारयाँ ना झण्ड। आ०। नैणा निहालै सुदरशण सेठ ने जी ॥ ५ ॥ दीक्षा रो महोछव जाण, जम्माली जेम पिछाण। आ०। मोटै मंडाणै ले गया बाग में जी ॥ ६ ॥ सेविका ने भूमिका

धात्री वाहन तिण अवसरै, सेठ नो निखमण जाण।
हिवै करै महोछव दीक्षा तणा, कर मोटै मंडाण ॥ ४ ॥

वाजींत्र विविध प्रकार ना, आवाज करै गुञ्जार।
ते लागै कानां ने सुहामणा, मन में हर्ष अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३७ मी ॥

(देशी—आछेलाल)

आगै कर नेजा निसाण, ध्वजा पताका जाण। आछे-लाल। महेन्द्र ध्वजा घणी रलियामणी जी ॥ १ ॥ हाथी घोड़ा ने रथ शिणगार, पायक विविध प्रकार। आ०। चौरङ्गणी सेन्याँ ले निसरयो जी ॥ २ ॥ राजा चाल्यो आगीवाण, कर मोटै मंडाण। आ०। अनेक सुभटाँ स्यूं राजा परवरयो जी ॥ ३ ॥ करै घणा हगाम, सेठ तणा गुण ग्राम। आ०। जय जय शब्द मुख उचरै जी ॥४॥ माँचा ऊपर माँचा मण्ड, घणा नर नारयाँ ना झण्ड। आ०। नैणा निहालै सुदरशण सेठ ने जी ॥ ५ ॥ दीक्षा रो महोछव जाण, जम्माली जेम पिछाण। आ०। मोटै मंडाणै ले गया वाग में जी ॥ ६ ॥ सेविका ने भूमिका

१६ ॥ थया सुदरशण साध, पाम्या पर्म समाध । आ० । गुरु समीपै बैठा रूड़ी रीत स्यूं जी ॥ १७ ॥ राजादिक वन्दै ताम, करै सेठ तणा गुण ग्राम । आ० । आँसूड़ा न्हांख सहु पाछा वल्या जी ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

मनोरमा कहै शीश नमाय ने, म्हॉनै छोड़्या आज ।
जतन घणा कर पालज्यो, सारज्यो आत्म काज ॥ १ ॥

पॉच प्रमाद ने छोड़ने, आलस अङ्ग न आण ।
आराधज्यो गुरु आगन्या, ज्यूं वेगा पहुँचो निरवाण ॥२॥

इम कही मनोरमा अस्त्री, वन्दणा करै वारुम्वार ।
पाछी आई घर रोंवती, साथे सहु परिवार ॥ ३ ॥

सञ्जम आदर सेठ जी, गुरु साथे कियो विहार ।
तप जप संजम खप करै, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल ३८ मी ।

(देशी—साधूजी भला पधारयाजी आज)

पांच महाव्रत पालता जी, पालै पञ्च आचार । पांच

काले रैंन डरावणी जी, विजली चमकै घनघोर । चाचर मछर चटका भरै जी, ते परीषा सहै कठिन कठोर ॥ सु० ॥ सा० ॥ ६ ॥ इण रीते मुनिवर तप तपै जी, तीनूई काल मझार । एक मुक्ति जावण रे कारणे जी, और वांछा नहीं छै लिगार ॥ सु० ॥ सा० ॥ १० ॥ प्रिय धर्मी गुण आगलो जी, दृढ़ धर्मी साहसधीर । कर्म काटण अति शूरमा जी, दिन दिन पतलो पाड़ै शरीर ॥ सु० ॥ सा० ॥ ११ ॥ एक दिन सुदरशण चिन्तवै जी, कहै गुरां समीपे जी आय । आज्ञा होवै स्वामी तुम तणी जी, तो हूं एकल विहारी थाय ॥ सु० ॥ सा० ॥ १२ ॥ वचन सुणी गुरु बोलिया जी, मुनि जूं तो ने सुख थाय । आज्ञा ले विचरया एकला जी, मन मे हर्ष उछाह ॥ सु० ॥ सा० ॥ १३ ॥ गावो नगरा विचरतो जी, करता उग्र विहार । कर्म जोगे मुनि आविया जी, पाटलीपुर नगर मझार ॥ सु० ॥ सा० ॥ १४ ॥ पाटलीपुर नगरी बाहिरै जी, विनय बाग उद्यान । तिहां साधु सुदरशण समोसरया जी, ध्यावै निरमल ध्यान ॥ सु० ॥ सा० ॥ १५ ॥
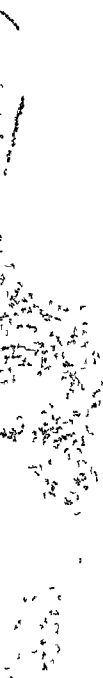
ढाल ३६ मी।

(देशी—सीता सुन्दरी रे)

हिवै सेठ सुदर्शण साधु ने रे, वेश्या देसी उपसर्ग अनेक। पिण साधु सुदर्शण चलसी नहीं रे, ते सुणज्यो आण विवेक॥ धूतारी कामणी रे॥ १॥ तिणहिज काले ने तिण समै रे, सुदर्शण मुनिराज। मास खमण ने पारणै रे, उठ्यो भोजन काज॥ धू०॥ २॥ नगरी में फिरताँ थकां रे, साधू आयो वेश्या रे द्वार। साधु ने धाय पंडिता देखने रे, आ चमकी चित्त मझार॥ धू०॥ ३॥ जब पण्डिता धाय सताब स्यूं रे, तिण कह्यो वेश्या ने जाय। अभया राणी री वारता रे, दवदन्ती ने दीधी सुणाय॥ धू०॥ ४॥ अभया राणी कपिला ब्राह्मणी रे, त्यां छोड़ी शरम ने लाज। विषय सेवण एहथी रे, त्यांरो सरियो नहीं कोई काज॥ धू०॥ ५॥ कहै यां दोयां खप कीधी घणी रे, ओ तो चलियो नही तिलमात। ओ दोयां आगै संठो रह्यो रे, ते मांड कही सर्व वात॥ धू०॥ ६॥ ए धाय ना वचन वेश्या सुण्या रे, कहै मुंह मचकोड़ी ने ताम। जो हूं सेठ सुदरशण वश करूं रे, तो दवदन्ती छै

थाय जी। भलो ने पधारया म्हारैं साधु जी ॥ १ ॥ धन घड़ी म्हारैं आज री, मैं वन्द्या मोटा अणगार जी। अरज सुणो एक मांहरी, आप हम तणो करो उद्धार जी ॥ भ० ॥ २ ॥ मन्दिर पधारो आप हम तणैं, वहरो मुझ तणो आहार जी। आप कृपा करो मुझ ऊपरैं, ज्यूं हम तणो होय निस्तार जी ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए वचन वेश्या तणो सांभली, मान लियो तिणवार जी। मुनिवर कपट जाण्यो नहीं, पैठा छै मन्दिर मझार जी ॥ भ० ॥ ४ ॥ मुनिवर उभो थयो चोक में, वेश्या उभी मुनिवर पास जी। भोजन मंगाया चित्रशाल थी, मुनिवर स्यूं करैं अरदास जी ॥ भ० ॥ ५ ॥ खेद निवारो स्वामी तुम तणो, टुकेक करो विस-राम जी। भोजन करो स्वामी जुगत स्यूं, वैसी ने एक ठिकाण जी ॥ भ० ॥ ६ ॥ षटरस भोजन लेई करी, मेल्या मुनि आगैं आण जी। भोजन मुनिवर देखिया, घणा मेवा ने विविध पकवान जी ॥ भ० ॥ ७ ॥ नवां नवां भोजन देख ने, समझ गया मन मांय जी। आ तो स्त्री नही छै श्राविका, कुपातर दिसै छै ताय जी ॥ भ० ॥ भ० ॥ ८ ॥ जब ए फन्द जाणी ने साधु जी, पाछा

थाय जी । भलो ने पधारया म्हारै साधु जी ॥ १ ॥ धन घड़ी म्हारै आज री, मैं वन्द्या मोटा अणगार जी । अरज सुणो एक मांहरी, आप हम तणो करो उद्धार जी ॥ भ० ॥ २ ॥ मन्दिर पधारो आप हम तणै, वहरो मुझ तणो आहार जी । आप कृपा करो मुझ ऊपरै, ज्यूं हम तणो होय निस्तार जी ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए वचन वेश्या तणो सांभली, मान लियो तिणवार जी । मुनिवर कपट जाण्यो नहीं, पैठा छै मन्दिर मझार जी ॥ भ० ॥ ४ ॥ मुनिवर उभो थयो चोक में, वेश्या उभी मुनिवर पास जी । भोजन मंगाया चित्रशाल थी, मुनिवर स्यूं करै अरदास जी ॥ भ० ॥ ५ ॥ खेद निवारो स्वामी तुम तणो, टुकेक करो विस-राम जी । भोजन करो स्वामी जुगत स्यूं, बैसी ने एक ठिकाण जी ॥ भ० ॥ ६ ॥ षटरस भोजन लेई करी, मेल्या मुनि आगै आण जी । भोजन मुनिवर देखिया, घणा मेवा ने विविध पकवान जी ॥ भ० ॥ ७ ॥ नवां नवो भोजन देख ने, समझ गया मन मांय जी । आ तो स्त्री नहीं छै श्राविका, कुपातर दिसै छै ताय जी ॥ भ० ॥ भ० ॥ ८ ॥ जब ए फन्द जाणी ने साधु जी, पाछा

आप भोगवो महल में चाल जी ॥ भ० ॥ १६ ॥ ए वचन वेश्या तणो सांभली, चलियो नहीं अंश मात जी। वेश्या विषय री चाही थकी, पकड्या मुनि तणा हाथ जी ॥ भ० ॥ १७ ॥ पकड़ ले गई वेश्या महल में, तिण सेज्या ऊपर दियो वैसाण जी। तिण कामणी चरित्र किया घणा, विविध पणे बोली वाण जी ॥ भ० ॥ १८ ॥ इण रीत तीन दिन वीती गया, कीधी अनेक विध तान जी। पिण साधु सुदर्शण चलियो नही, चूको नहीं मूल ध्यान जी ॥ भ० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

जैसो गोलो मैंण रो, तप लाग्यां गल जाय।
ज्यू कायर पुरुष स्त्री कन्है, तुरत डिगे छिन मांय ॥१॥
जैसो गोलो गारको, ज्यू धमें ज्यूं लाल।
ज्यू शूर पुरुष स्त्री कन्हे, अडिग रहै व्रत शाल ॥ २ ॥
गार गोला री दीधी उपमा, साधु सुदर्शण ने जिनराय।
ज्यूं २ उपसर्ग उपजै, तिम २ गाढ़ो थाय ॥ ३ ॥
उपसर्ग उपनो वेश्या तणो, जब समरयो श्री नवकार।
सागारी अणशण लियो, शरण पचख्या च्यार ॥ ४ ॥

जाय चलाऊं तेहने, एहवो कियो मन में विचार ॥ सु०
॥ वं० ॥ ४ ॥ जब तो इण ने देवता राखियो, अब कुण
छै इण ने आधार । सु० । तो बोल ऊपर करूं मांहरो,
इण ने भिष्ट करूं इण वार ॥ सु० ॥ वं० ॥ ५ ॥ सोले
शिणगार करी तिहां, आई साधु पास । सु० । बतीस विध
नाटक किया, ऊभी करै अरदास ॥ सु० ॥ वं० ॥ ६ ॥
हूं थांरे ई कारण साध जी, मूई कर अपघात । सु० ।
वींतर पणैं आय ऊपनी, थे सुख भोगवो मुझ नाथ ॥ सु०
॥ वं० ॥ ७ ॥ ए वचन सुणी वैतरणी तणा, पिण चूका
नहीं शुभ ध्यान । सु० । निश्चल चित ते थिर कियो, [illegible]
मेरु समान ॥ सु० ॥ वं० ॥ ८ ॥ वैतरणी फेर बोली
तिरो, सुण रे सुदरसण वान । सु० । नैन निहाले [illegible]
दर्प स्यूं, तू करो हमारो मान ॥ सु० ॥ वं० ॥ ९ ॥ [illegible]
चित हुनि चलियो नहीं, फिर बोली [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पिण मुनिवर ध्यान डोल्यो नहीं, जब आ रीस चढ़ी तत्काल । मु० । उग्र परीसो दियो साधु ने, रूप करी विकराल ॥ मु० ॥ वं० ॥ १२ ॥ तो पिण मुनिवर डिगियो नहीं, राख्यो समता भाव । मु० । जब राक्षसी कोप चढ़ी घणी, करवा लागी अन्याय ॥ मु० ॥ वं० ॥ १३ ॥ रूप करी पंखणी थई, दुख देवा ने हुई तयार । मु० । जल स्यूं भर भर चांच ने, साधु ने छांट्यो तिणवार ॥ मु० ॥ वं० ॥ १४ ॥ रीस भरी थकी पापणी, सीत नो परीसो दियो करूर । मु० । मुनिवर समभाव राख ने, कर्म किया चकचूर ॥ मु० ॥ वं० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

तिण काले ने तिण समे, शील सहाई देव ।
आप आप तणा भवन में, सुख भोगवन्ता नित मेव ॥१॥
जब आसण कम्पियो तेहनो, देख्यो अवध विचार ।
कष्ट देख्यो सुदर्शण भणी, सताब स्यूं आया तिणवार ॥२॥
देवता सहु भिल्लो करी, हुंकार कियो तिणवार ।
व्यंतरणी ने सराप थी, दोधी तुरत न्हसाय ॥ ३ ॥

कष्ट देख मुनिवर तणो, साधु ने करी प्रणाम।
कर जोड़ी उभा साधु आगले, करै घणा गुण ग्राम ॥४॥

ढाल ८२ मी।

(देशी—धन २ जम्बू स्वाम ने)

तिण काले ने तिण समै, सुदरशण नामे अणगार हो। मुणिंदा। त्यों राग न आण्यो देवता ऊपरै, देवी स्यूं न आण्यो द्वेष लिगार हो। मुणिन्दा। धन २ सुदरशण अणगार ने ॥ १ ॥ चढ़ता प्रणामा वैराग स्यू, ध्यावै छै शुकल ध्यान हो। मु०। घन घातिया कर्म खपाय ने, पाम्या केवल ज्ञान हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ २ ॥ केवल महिमा देवतों करी, किया घणा गुण ग्राम हो। मु०। धर्म देशना सुण साधों तणी, देव गया निज ठाम हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ केवल महिमा देखने, राक्षसी आई मुनिवर पास हो। सु०। भाव भक्त करि वन्दणा करै, कर जोड़ी करै अरदास हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ ४ ॥ अपराध खमावै देवी आपरो, थे खमज्यो मोटा मुनिराय हो। मु०। हूं पापण छूं मोटकी, मैं अत्यन्त कियो अन्याय हो

कष्ट देख मुनिवर तणो, साधु ने करी प्रणाम ।
कर जोड़ी ऊभा साधु आगले, करै घणा गुण ग्राम ॥४॥

ढाल ४२ मी ।

(देशी—धन २ जम्बू स्वाम ने)

तिण काले ने तिण समै, सुदरशण नामे अणगार हो । मुणिंदा । त्यां राग न आण्यो देवता ऊपरै, देवी स्यूं न आण्यो द्वेष लिगार हो । मुणिन्दा । धन २ सुदरशण अणगार ने ॥ १ ॥ चढ़ता प्रणामा वैराग स्यूं, ध्यावै छै शुकल ध्यान हो । मु० । घन घातिया कर्म खपाय ने, पाम्या केवल ज्ञान हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ २ ॥ केवल महिमा देवतां करी, किया घणा गुण ग्राम हो । मु० । धर्म देशना सुण साधां तणी, देव गया निज ठाम हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ केवल महिमा देखने, राक्षनी आई मुनिवर पास हो । मु० । भाव भक्त करि वन्दणा करै, कर जोड़ी करै अरदास हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ ४ ॥ अपराध खमावै देवी आपरो, थे खमज्यो मोटा ऋषिराय हो । मु० । हूं पापण छूं मोटकी, मैं अत्यन्त किया अन्याय हो

वदै ते परमाण हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ १२ ॥ चरित्र कियो सुदर्शण सेठ रो, नाथदुवारै मेवाड़ मझार हो । मु० । सम्वत अठारै सै पचासै समै, कार्तिक सुद पाँच्यूं शुक्रवार हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ १३ ॥

॥ सोरठा ॥

सुण्या तणो ओही सार रे, शील पालै नर जे सदा ।
पामै भव तणो पार रे, इण वात में शङ्का नहीं ॥ १ ॥
ऐसो शील निधान रे, भव जीवाँ हितकर आदरो ।
ते निश्चै जासी निरवाण रे, देवलोक में साँसो नहीं ॥२॥
षट दरशण रै माँह रे, शील अधिको वखाणियो ।
तप जप ए सहु जाय रे, शील विना एक पलक में ॥३॥
किताएक कीजै वखाण रे, शील वरत में गुण घणा ।
जोवो सूत्र पुराण रे, शील साराँ वरताँ सिरै ॥ ४ ॥
ए शील तणाँ वखाण रे, पढ़ै गुणै जे हित करी ।
हुवै पवित्र जीभ कान रे, सुख पावै शिव मार्ग तणा ॥५॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

॥ मु० ॥ ध० ॥ ५ ॥ मैं उपसर्ग दीधो आपने, मैं कीधा पाप अघोर हो। मु०। तिण पाप कर्मां स्यूं किम छूटस्यूं, खमाऊं बेकर जोड़ हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ ६ ॥ ए वचन सुणी मुनिवर बोलियो, अभया राणी ने कहै तिण-वार हो। मु०। उपगार छै सब थांहरो, तो स्यूं नहीं म्हारे द्वेष लिगार हो। मु० ॥ ध० ॥ ७ ॥ भिन्न २ उपदेश देई तेहने, अभया देवी ने दीधी समझाय हो। मु०। तिण स्यूं हर्ष सन्तोष पामी घणी, आणी मारग ठाय हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ ८ ॥ पाछल रात समाने विषै, सर्व कर्म्मां तणो कर सोष हो। मु०। छूटा संसार ना दुःख थकी, पहुंचा अविचल मोक्ष हो ॥ मु० ॥ ध० ॥८॥ जहां सदा काल सुख सासता, त्यांरो कदेय न आवै पार हो। मु०। अनुपम सुख निराबाध छै, तीनूंई काल मझार हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ शील माँहैं सेठा रह्या, ते परसिद्ध हुवा लोक मझार हो। मु०। तिण स्यूं शील तणा गुण वरणव्या, शील सर्व वरतां रो सिरदार हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ ११ ॥ कथा रे अनुसार थी, ओछो अधिको कह्यो हुवै अजाण हो। मु०। तो मिच्छामि दुक्कड़ं छै माँहरै, ज्ञानी

वदै ते परमाण हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ १२ ॥ चरित्र कियो सुदर्शण सेठ रो, नाथदुवारै मेवाड़ मझार हो। मु०। सम्वत अठारै सै पचासै समै, कार्तिक सुद पाँच्यूं शुक्रवार हो ॥ मु० ॥ ध० ॥ १३ ॥

॥ सोरठा ॥

सुण्या तणो ओही सार रे, शील पालै नर जे सदा।
पामै भव तणो पार रे, इण वात में शङ्का नहीं ॥ १ ॥
ऐसो शील निधान रे, भव जीवाँ हितकर आदरो।
ते निश्चै जासी निरवाण रे, देवलोक में साँसो नहीं ॥२॥
षट दरशण रै माँह रे, शील अधिको वखाणियो।
तप जप ए सहु जाय रे, शील विना एक पलक में ॥३॥
किताएक कीजै वखाण रे, शील वरत में गुण घणा।
जोवो सूत्र पुराण रे, शील सारों वरतों सिरै ॥ ४ ॥
ए शील तणाँ वखाण रे, पढ़ै गुणै जे हित करी।
हुवै पवित्र जीभ कान रे, सुख पावै शिव मार्ग तणा ॥५॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥